4 पेज

दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

पेज 7

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 76 | ग्वालियर शनिवार, 24 दिसम्बर 2022 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

भारत के नौसेनाध्यक्ष श्रीलंका के चार दिवसीय दौरे पर

कोलंबो। भारत के नौसेनाध्यक्ष (सीएनएस), एडमिरल आर हरि कुमार श्रीलंका की चार दिवसीय आधिकारिक दौरे पर हैं. इस दौरान वह राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे, प्रधानमंत्री दिनेश गुणवर्धने और रक्षा राज्य मंत्री प्रेमिता बंडारा टेनाकून से मुलाकात करेंगे. वह श्रीलंकाई नौसेना कमांडर वाइस एडमिरल निशांथा उलुगेटेन के निमंत्रण पर सोमवार को कोलंबो पहुंचे. उनकी अगवानी उनके श्रीलंकाई समकक्ष रियर एडमिरल प्रियंता परेरा ने की.कोलंबो में भारतीय उच्चायोग ने कहा, अपनी यात्रा के दौरान, सीएनएस के रक्षा सचिव, रक्षा कर्मचारियों के प्रमुख और सेवा कमांडरों से मिलने की उम्मीद है और गुरुवार को वह नौसेना और समुद्री अकादमी, त्रिंकोमाली की पासिंग आउट परेड में मुख्य अतिथि होंगे. बयान में कहा गया है, सीएनएस के यात्रा दोनों देशों के बीच मजबूत संबंधों और घनिष्ठ सहयोग का प्रतीक है.यह दोनों देशों के बीच मौजूदा द्विपक्षीय समुद्री संबंधों और सामान्य सुरक्षा चिंता के क्षेत्रों को मजबूत करेगा. क्षेत्र में शांति सुनिश्चित करने की दिशा में क्षमता बढ़ाने और क्षमता निर्माण की पहल पर यात्रा के दौरान चर्चा की जाएगी. मिशन ने कहा, यह दौरा भारत की नेबरहुड फर्स्ट नीति के अनुरूप दोनों देशों के बीच बढ़ते सौहार्द और दोस्ती का भी संकेत है.उच्चायोग ने कहा कि जहाज श्रीलंका नौसेना के साथ प्रशिक्षण में संलग्न होगा और समुद्री साझेदारी अभ्यास में भाग लेगा. भारतीय नौसेना ने अपनी समुद्री क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अगस्त में श्रीलंकाई वायु सेना को एक समुद्री टोही विमान प्रदान करने के अलावा मार्च में वार्षिक अभ्यास एसएलआईएनईएक्स 21 के दौरान श्रीलंका नौसेना के साथ बातचीत की. भारतीय नौसेना अपने श्रीलंकाई समकक्षों को अनुकूलित और विशेष प्रशिक्षण भी प्रदान कर रही है, जिसमें समुद्री प्रौद्योगिकी भी शामिल है.

भारत की यूएनएससी अध्यक्षता के कार्यक्रमों के लिए यूएस जाएंगे

नई दिल्ली। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर 14 और 15 दिसंबर को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की भारत की अध्यक्षता के लिए चल रहे दो उच्च-स्तरीय मंत्रिस्तरीय हस्ताक्षर कार्यक्रमों की अध्यक्षता करने के लिए न्यूयॉर्क का दौरा करेंगे. उनके संयुक्त राष्ट्र महासचिव और महासभा के अध्यक्ष के साथ विचार-विमर्श करने की भी उम्मीद है, साथ ही भारतीय अध्यक्षता पद के उच्च स्तरीय हस्ताक्षर कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अपने समकक्षों के साथ द्विपक्षीय रूप से मुलाकात करेंगे.संयुक्त राष्ट्र महासचिव और यूएनएससी के सदस्य देशों के लिए बाजरा का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष 2023 पर भारत की पहल को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष फोटो प्रदर्शनी भी उनके द्वारा आयोजित की जाएगी. 14 दिसंबर को होने वाली उच्च स्तरीय मंत्रिस्तरीय खुली बहस सुधारित बहुपक्षवाद के लिए नई दिशा (एनओआरएमएस) के विषय पर है और 15 दिसंबर को होने वाली उच्च स्तरीय ब्रीफिंग आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए वैश्विक दृष्टिकोण - चुनौतियां और आगे का रास्ता पर है. ये दोनों विषय संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अपने वर्तमान कार्यकाल के दौरान भारत के लिए प्रमुख प्राथमिकताएं रहे हैं.सुधारित बहुपक्षवाद पर खुली बहस का प्राथमिक फोकस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के दीर्घकालिक सुधारों सहित वैश्विक शासन बहुपक्षीय वास्तुकला में सुधारों की तत्काल आवश्यकता को गंभीरता से संबोधित करने के लिए सभी सदस्यों को प्रोत्साहित करना है.

भारत से ज्यादा चीनी सैनिकों को नुकसान, हमारे जवान एक इंच भी नहीं हटे

नई दिल्ली।-अरुणाचल प्रदेश के तवांग सेक्टर में चीनी सेना की ओर से घुसपैठ की खबर आई है. जानकारी ये भी सामने आ रही है कि शुरुआत में 200 चीनी सैनिकों ने भारतीय क्षेत्र में घुसने की कोशिश की थी, जिन्हें महज 50 भारतीय सैनिकों ने पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया. इस घटना में कई चीनी सैनिक घायल हुए, तो कुछ भी भारतीय भी. तभी रि-इंफोर्समेंट के साथ 100 चीनी सैनिक और पहुंच गए तो उन्हें बल मिलने लगा. लेकिन भारतीय सेना के 75 जवान भी वहां पहुंच गए और सभी 300 चीनी सैनिकों की धज्जियां उड़ा दी. इस पूरे घटनाक्रम में तीन दर्जन से अधिक चीनी जवान बुरी तरह से घायल हैं. वहीं, एक दर्जन भारतीय जवान भी घायल हैं. स्थानीय बीजेपी सांसद ने बताया कि भारतीय सैनिकों ने एक भी चीनी सैनिक को भिडंत की जगह के एक भी इंच आगे नहीं आने दिया. बल्कि उन्हें बुरी हालत में वापस लौटने को मजबूर कर दिया.

भारतीय सेना ने दिया मुंहतोड़ जवाब-अरुणाचल-ईस्ट लोकसभा सीट से बीजेपी सांसद तापिर गाओ ने कहा कि मैंने तवांग सेक्टर में चीनी घुसपैठ के बारे में सुना. पूरी जानकारी जब सामने आई तो पता चला है कि पीएलए के जवानों ने भारतीय सीमा में घुसपैठ की कोशिश की. वो एक चोटी से भारतीय पोस्ट को हटाना चाहते थे. लेकिन भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को मुंहतोड़ जवाब दिया. कुछ भारतीय जवान घायल हैं, तो उससे कहीं ज्यादा नुकसान चीनी जवानों को पहुंचा है. भारतीय सेना सीमा पर एक इंच भी पीछे नहीं हटी है. उन्होंने चीनी घुसपैठ की निंदा की और पूरे वाकये को भी चीन की बदमाशी से जोड़ा है. इस बीच एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने मामले को लोकसभा में उठाने के लिए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव रखा है. उन्होंने कहा कि भारतीय सेना के शौर्य पर किसी को शक नहीं है. लेकिन सरकार को अपनी मंशा साफ करनी चाहिए. ये पूरा घटनाक्रम 9 दिसंबर का है, और पूरे देश को इसकी जानकारी 12 दिसंबर को मिल रही है.

अमित शाह ने कांग्रेस के सवालों पर किया पलटवार, कहा-चीनी दूतावास से पैसे क्यों लिए?

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में तवांग के मुद्दे पर कांग्रेस के सवालों पर पलटवार किया है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस बताए कि वर्ष 2005-07 के बीच राजीव गांधी फाउंडेशन को चीनी दूतावास से एक 1 करोड़ 35 लाख रुपये मिले थे, उसका उन्होंने क्या किया? कांग्रेस देश को बताए कि राजीव गांधी चैरिटेबल ट्रस्ट ने जाकिर नाइक की संस्था से बिना अनुमति लिए ख़ष्टक्र खाते में जुलाई 2011 को 50 लाख रुपये क्यों लिए? गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि लोकसभा में कांग्रेस के हंगामे की वजह कुछ और ही थी. उन्होंने कहा कि कांग्रेस राजीव गांधी फाउंडेशन से जुड़े सवाल पर चर्चा से बचना चाहती है. उन्होंने कहा कि जब उन्होंने सवालों की सूची देखी तो पांच नंबर सवाल को देखकर मुझे कांग्रेस की चिंता समझ में आई. यह सवाल राजीव गांधी फाउंडेशन के लाइसेंस रद्द होने को लेकर था. अमित शाह ने कहा कि राजीव

गांधी फाउंडेशन ने चीन से राशि ली. चीनी दूतावास से कांग्रेस के राजीव गांधी फाउंडेशन को 1.35 करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे. उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार में चीन ने पूरे अरुणाचल पर दावा किया. इसे उन्होंने शोध का विषय बनाया था क्या. अगर बनाया था तो इसका नतीजा क्या था? का दावा है कि दूतावास से मिली राशि भारत और चीन के रिश्तों पर शोध के लिए थी, तो देश यह जानना चाहता है कि क्या 1962 के युद्ध के दौरान भारत ने जो जमीन गंवाई थी, क्या उसे शोध में लगाया गया?गृहमंत्री अमित शाह ने कांग्रेस पर नि?शाना साधा कि नेहरू जी के प्रेम के कारण ही भारत यूएनएससी की स्थायी सदस्यता नहीं पा पाया. जब गलवान में देश के जवान चीनियों से मुकाबला कर रहे थे, चीनी दूतावास के अधिकारियों को रात्रिभोज कौन दे रहा था.

राघव चड्ढा ने राज्यसभा में दिया सस्पेंशन नोटिस

नई दिल्ली। अरुणाचल प्रदेश के तवांग में भारत-चीन सैनिकों के बीच झड़प के मामले में संसद में चर्चा होगी. इस मामले में तुरंत चर्चा कराए जाने के लिए आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने सस्पेंशन नोटिस दिया है. राघव चर्चा ने नियम 267 के तहत सस्पेंशन नोटिस दिया है. उन्होंने कहा कि सरकार इस सबसे जरूरी मुद्दे पर तुरंत चर्चा करे. बता दें कि 9 दिसंबर को अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में चीनी सैनिकों ने घुसपैठ की कोशिश की थी., जिसे भारतीय सेना के जवानों ने विफल कर दिया. इस दौरान दोनों तरफ के जवानों में झड़प भी हुई है, जिसमें करीब एक दर्जन भारतीय जवान घायल हुए हैं, तो तीन दर्जन से अधिक चीनी जवानों के घायल होने की खबर है.राघव चड्ढा ने कहा कि सरकार को इस मुद्दे पर तुरंत न सिर्फ रूख स्पष्ट करना चाहिए, बल्कि ऐसी किसी भी हरकत का मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए. पढ़ें, राघव चड्ढा का नोटिस

भारत-चीन के जवानों के बीच झड़प दोनों तरफ से कई सैनिक घायल

नई दिल्ली।देश के सबसे नॉर्थ ईस्ट राज्य अरुणाचल प्रदेश में भारत और चीन के बीच झड़प हुई है. इस झड़प में दोनों ओर से सैनिक घायल हुए हैं. सूत्रों के हवाले से खबर आई है कि 9 दिसंबर की रात को चीनी सैनिक तवांग सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा के एकदम पास आ गए थे. इस पर भारतीय सेना के जवानों ने उनका काफी दृढ़ता से मुकाबला किया. हालांकि, बाद में शांति बहाली के लिए दोनों तरफ से फ्लैग मार्च निकाला गया है. सूत्रों के अनुसार, चीन की पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी अरुणाचल प्रदेश के तवांग में एलएसी तक पहुंचना चाह रही थी. चीनी सेना की इस हरकत का भारतीय जवानों ने जमकर विरोध किया. इस वजह से दोनों तरफ के सैनिक आमने-सामने आ गए और उनमें झड़प हो गई. हालांकि, अंत में भारतीय सेना के जवानों ने चीनी सैनिकों को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया और वे वापस चले गए.

भारत में दुनिया के सबसे अधिक 80 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ता

नई दिल्ली।केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा है कि भारत 80 करोड़ यूजर्स के साथ दुनिया का सबसे बड़ा कनेक्टेड देश बन गया है. इंडिया इंटरनेट गवर्नेंस फोरम 2022 (आईआईजीएफ2022) में बोलते हुए मंत्री ने कहा कि 5जी और भारतनेट की सबसे बड़ी ग्रामीण इंटरनेट कनेक्टिविटी नेटवर्क परियोजना में 1.2 बिलियन भारतीय उपयोगकर्ता होंगे, जो दुनिया में सबसे अधिक होंगे.रविवार को राजधानी में आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम में मंत्री ने कहा, हम तकनीकी नवाचारों के साथ-साथ आधुनिक नियामक नीतियों के प्रासंगिक बने रहने की भी उम्मीद करते हैं.

पाकिस्तान ने नहीं चुकाई किश्त,तो थम जाएगा विदेशी निवेश

नई दिल्ली।पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने पाकिस्तान की मिली जुली सरकार पर करारा हमला बोला है. इमरान खान ने गठबंधन सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि अगर देश डिफॉल्ट करता है तो इससे चोरों के गिरोह के हितों को कोई नुकसान नहीं होगा. जियो न्यूज के मुताबिक, इमरान खान ने कहा है कि चोरों के गिरोह के पास विदेशों में अरबों डॉलर की संपत्ति है, इसलिए उन्हें देश के आर्थिक पतन की परवाह नहीं है. उन्होंने कहा कि देश के नेता सिर्फ अपने फायदे की बात ही सोचते हैं. वो किसी और चीज की परवाह नहीं करते.रिपोर्ट के मुताबिक, इमरान ने कहा कि अमेरिकी डॉलर में और तेजी आएगी, यदि पाकिस्तान डिफॉल्ट करता है तो यहां कोई विदेशी निवेश नहीं होगा. उन्होंने कहा कि हम पर चोरों का एक गरुप थोपा गया है, यह गिरोह पिछले 30 साल से राष्ट्रीय संपत्ति की चोरी कर रहा ह

गलवान के बाद अब तवांग में संघर्ष, चीन के 300 जवानों पर भारी पड़े भारत के 125 वीर सैनिक

नई दिल्ली।लद्दाख के गलवान के बाद अब अरुणाचल प्रदेश के तवांग में चीन ने एक बार दुस्साहन किया है. वास्तविक नियंत्रण रेखा (ख़्ष्ट) पर तवांग के नजदीक लगभग 15 हजार फीट की ऊंचाई पर भारत और चीन के सैनिक आमने-सामने आ गए. इस दौरान चीन के 300 सैनिकों पर भारत के 125 वीर सैनिक भारी पड़ गए. अंत में चीनी सैनिकों को पीछे हटना पड़ा. इस घटना में भारत के एक दर्जन और चीन के 2 दर्जन जवान घायल हो गए हैं. बताया जा रहा है कि भारत के 6 घायल जवानों को इलाज के लिए गुवाहाटी लाया गया है. यहां उन्हें गुवाहाटी के 151 बेस अस्पताल में भर्ती कराया गया है. अरुणाचल प्रदेश के तवांग में 9 दिसंबर की रात को यह घटना हुई थी. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के 300 से ज्यादा सैनिक 17 हजार फीट की ऊंचाई पर एक चोटी की ओर बढ़ रहे थे, जिसका भारतीय सेना के जवानों ने विरोध किया. इस पर दोनों देशों के सैनिकों के बीच झड़प हो गई. भारत के 125 सैनिकों ने उनको वापस खदेड़ दिया. बताया जा रहा है कि तवांग क्षेत्र में चीनी सेना के जवान भारत के एक पोस्ट को हटाना चाहते थे.इस घटना के बाद तवांग में सेना अलर्ट पर है. इस झड़प के बाद भारत और चीन के कमांडरों ने फ्लैग मीटिंग की, ताकि क्षेत्र में शांति बनी रहे. आपको बता दें कि अरुणाचल प्रदेश के तवांग सेक्टर में एलएसी के पास कुछ ऐसे इलाके हैं,

साईबर धोखाधड़ी के मामले में हजार करोड़ की संपत्ति जब्त की

नई दिल्ली। सरकार ने सोमवार को लोकसभा को सूचित किया कि साइबर और क्रिप्टो संपत्ति धोखाधड़ी से संबंधित 1000 करोड़ रुपये से अधिक के अपराध को धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत कुर्क या जब्त कर लिया गया है. इसके अलावा, अप्रैल 2019 और नवंबर 2022 के बीच ऐसी कंपनियों द्वारा अनुमानित जीएसटी चोरी लगभग 22,936 करोड़ रुपये थी.वित्त मंत्रालय ने एक लिखित उत्तर में कहा कि प्रवर्तन निदेशालय साइबर और क्रिप्टो संपत्ति धोखाधड़ी से संबंधित कई मामलों की जांच कर रहा है, जिसमें ऑनलाइन गेमिंग आदि का उपयोग धोखाधड़ी करने और उससे होने वाली आय की हेराफेरी करने के लिए किया गया है.

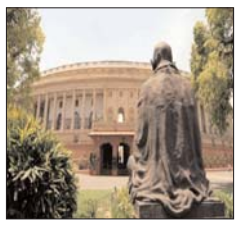

उन्होंने कहा, इन मामलों में, 6 दिसंबर, 2022 तक, धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत 1000 करोड़ रुपये से अधिक के अपराध की आय को जब्त/ फ्रीज किया गया है. साथ ही, 02 पूरक पीसी सहित 10 अभियोजन शिकायतें (पीसी) विशेष न्यायालय, पीएमएलए, के समक्ष दायर की गई हैं.इसके अलावा, इसने कहा कि जहां तक वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की चोरी का संबंध है, सीबीआईसी के गठन ने भारत के साथ-साथ विदेशों में स्थित कुछ गेमिंग कंपनियों (ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों सहित) के खिलाफ जांच शुरू की है. अप्रैल 2019 से नवंबर 2022 की अवधि के दौरान इन कंपनियों द्वारा जीएसटी की अनुमानित चोरी 22,936 करोड़ रुपये आंकी गई है

संसद में राजनाथ सिंह के बयान के बाद अब चीन की आई प्रतिक्रिया

नई दिल्ली।अरुणाचल प्रदेश के तवांग में भारतीय सेना और चीनी सैनिकों के बीच झड़प के मामले में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लोकसभा में सरकार का पक्ष रखा. उन्होंने कहा कि सीमा पर हमारे जवानों ने बेहद बहादुरी ने चीनी सैनिकों को न सिर्फ मुंहतोड़ जवाब दिया, बल्कि उन्हें उल्टे पांव लौटने पर मजबूर भी कर दिया. रक्षा मंत्री ने बताया कि भारत का एक भी सैनिक न तो गंभीर रूप से घायल हुआ और न ही कोई शहीद हुआ. रक्षा मंत्री ने कहा कि इस झड़प के बाद दोनों पक्षों की ओर से फ्लैग मीटिंग हुई, और फिर दोनों पक्ष अपने पूर्व स्थान पर वापस चले गए. रक्षा मंत्री ने लोकसभा में 12 बजे अपना बयान दिया, तो राज्यसभा में 12.30 बजे के बाद. अब इस मामले में चीन की भी प्रतिक्रिया आई है. चीन ने कहा है कि हिंसक घटना की रिपोर्ट्स के बाद स्थिति भारत सीमा पर 'स्थिर' है. दोनों तरफ से राजनीतिक और कूटनीतिक स्तर पर मामलों को सुलझाया जा रहा है.रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लोकसभा में कहा कि 9 दिसंबर की घटना के बाद स्थानीय कमांडर ने 11 दिसंबर 2022 को अपने चीनी समकक्ष के साथ स्थापित

व्यवस्था के तहत एक फ्लैग मीटिंग की और इस घटना पर चर्चा की. उन्होंने कहा कि हमारी तरफ से चीनी पक्ष को इस तरह के एक्शन के लिए मना किया गया और सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए कहा गया. इस मुद्दे को चीनी पक्ष के साथ कूटनीतिक स्तर पर भी उठाया गया है. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि मैं सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हमारी सेनाएं हमारी भौमिक अखंडता को सुरक्षित रखने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं और इसके खिलाफ किसी भी प्रयास को रोकने के लिए सदैव तत्पर हैं. मुझे विश्वास है कि यह सदन हमारी सेनाओं की वीरता और साहस को एक स्वर से समर्थन देगा.

सुबह की थी अहम बैठक-इससे पहले, उन्होंने सुबह इस मामले में दिल्ली में अहम बैठक की. इस बैठक में सीडीएस जनरल (रि) अनिल चौहान के साथ ही तीनों सेना के प्रमुखों ने भी हिस्सा लिया और तवांग में चल रही गतिविधियों पर अपनी बात रखी. उन्होंने सेना की तैयारियों को भी रक्षामंत्री को ब्रीफ किया. बैठक में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान और सेना प्रमुख मनोज पांडे ने चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सुरक्षा स्थिति पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को जानकारी दी.

प्रेमिका से अवैध संबंध और उधारी मांगने से

क्षुब्ध होकर युवक का अपहरण कर मारी गोली, नदी में गाडी लाश

शिवपुरी/खतौरा । इंदार थानांतर्गत ग्राम इंदार में छह दिन पहले अचानक गायब हुए एक युवक की रविवार को गांव की ही नदी में लाश मिल गई। मृतक की हत्या उसके पडौसी ने प्रेमिका से मृतक के अवैध संबंधों व उधारी के रुपयों की मांग से क्षुब्ध होकर की थी। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ अपहरण सहित हत्या का प्रकरण कायम कर लिया है।जानकारी के अनुसार इंदार निवासी राकेश पुत्र भारत सिंह रघुवंशी उम्र 36 साल 12 दिसम्बर की रात 10 बजे अचानक घर से गायब हो गया था। राकेश की तलाश शुरू की तो इंदार नदी के पास उसके एक पैर का जूता पडा मिल गया, लेकिन राकेश न तो नदी में मिला और न कहीं

और।शिकायत के बाद पुलिस ने मोबाइल की काल डिटेल निकाली गई तो पता चला कि राकेश को अंतिम काल पडोसी देवेंद्र पुत्र रघुवीर चौहान का आया था। मृतक के स्वजनों की मानें तो संदेह के आधार पर जब देवेंद्र चौहान की तलाश की गई तो उसके स्वजन पहले तो यह कहते रहे कि देवेंद्र घर में है ही नहीं, लेकिन पुलिस ने घर की तलाशी ली गई। इसी दौरान राकेश के चचेरे भाई उमेश रघुवंशी ने संदेह के आधार पर घर में रखा बक्शा खोल दिया।

बक्शे में रजाई-गद्दे रखे हुए थे जब उन्हें हटाया तो उनके नीचे देवेंद्र लेटा हुआ था। उसके हाथ में कट्टा था। बताया जा रहा है कि पहले तो देवेंद्र ने उमेश व पुलिस पर ही कट्टा तान दिया और उसके बाद उसने खुद की कनपटी पर कट्टा लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया। हालांकि पुलिस की सक्रियता के चलते उसे गिरफ्तार कर लिया गया।देवेंद्र से पूछताछ की गई तो पहले तो देवेंद्र कहता रहा कि राकेश दो से तीन दिन में लौट आएगा वह अशोकनगर गया है। 17 दिसंबर को वह पुलिस को अशोकनगर तक घुमा लाया, लेकिन वहां जाकर फिर कहानी बदल दी। जब उसके स्वजन से पूछताछ की गई तो उसने हत्या स्वीकार ली और लाश बरामद करवा दी। आरोपित ने बताया कि उसने इंदार के शमशान घाट में गोली मारकर हत्या की थी। इसके बाद नदी में रेत में शव को गा?कर उस पर पत्थर रख दिए।

मध्य प्रदेश में चौंकाने वाली वारदात दुकान मालिक, नौकर को सम्मोहित करके गल्ले से निकाले 15 हजार रुपए

मध्य प्रदेश से एक अनोखी और चौंकाने वाली वारदात सामने आई है। यहां दो चोरों ने सम्मोहन विद्या का उपयोग करते हुए एक दुकानदार व उसके नौकर को वश में किया और फिर दुकान से अच्छे खासे पैसे चोरी कर लिए। कोलारस थानातर्गत लुकवासा में एक किराना की दुकान पर आए दो युवक किराना व्यवसायी को सम्मोहित कर उसके गल्ले में से 15 हजार रुपये लेकर रफूचक्कर हो गए। पूरी घटना गल्ला व्यापारी के सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है।

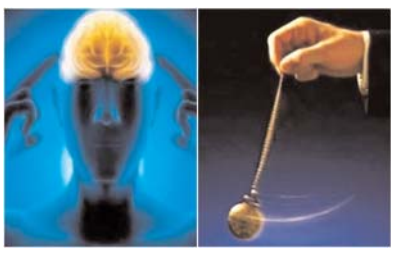

यह है पूरा घटनाक्रम-जानकारी के अनुसार लुकवासा निवासी किराना व्यवसायी राहुल गुप्ता व दुकान का कर्मचारी रविन्द्र कुशवाह दोपहर करीब तीन बजे अपनी दुकान पर बैठे हुए थे। इसी दौरान उनकी दुकान पर दो युवक आए। दोनों ही युवक देखने में पडे लिखे तथा बाहर के लोग लग रहे थे। दोनों ने अंग्रेजी बोलते हुए राहुल से कुछ सामान मांगा। इस दौरान एक युवक राहुल से बात करता रहा जबकि दूसरा उसके नौकर रविन्द्र से। दोनों ने बातों ही बातों में दुकान मालिक सहित उसके नौकर को सम्मोहित कर लिया। एक युवक ने इसी क्रम में राहुल को डालर देते हुए पेमेंट किया तो राहुल ने उसे कहा कि यह मुद्रा यहां नहीं चलती है। इसके बाद युवक ने उसे सौ का नोट निकाल कर दिया। राहुल ने अपने 60 रुपये काट कर उसे 40 रुपये वापिस करने के लिए गल्ला खोला तो उक्त युवक उससे जैसा कहता गया राहुल करता गया।

होश आया तो पता चला लुट गए-इस दौरान युवक ने राहुल के गल्ले में हाथ डालकर नोट उठाए, वापिस रखे, पर्स रखा। राहुल सब कुछ मूकदर्शक बना देखता रहा। इसी दौरान युवक पर्स के नीचे करीब 15 हजार रुपये दबा कर अपने साथ ले गया। वहीं दूसरे युवक ने रविंद्र कुशवाह की जेब में रखे 200 रुपये निकाल लिए। इसके बाद दोनों युवक वापिस चले गए। करीब 15 मिनट बाद राहुल और रविन्द्र की तंद्रा टूटी तो उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि उनके साथ ठगी करते हुए युवक गल्ले में से पैसा चुराकर ले गए। राहुल ने दुकान के सीसीटीवी कैमरे खंगाले तो सीसीटीवी कैमरे में युवक की पूरी करतूत कैद हो गई कि उसने किस तरह से सम्मोहन का यह काला खेल खेला। पुलिस को मामले की शिकायत दर्ज कराई गई

मुख्यमंत्री ने किया सीएमओ को सस्पेंड शिवपुरी को नगरनिगम बनाने की घोषणा की

शिवपुरी. प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शिवपुरी के नगरपालिका सीएमओ को सस्पेंड किया है। सीएमओ शैलेश अवस?थी की लगातार शिकायतें मिल रही थी। साथ ही वे अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों से सामंजस्य भी नहीं बना पा रहे थे। इसके साथ ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शिवपुरी को नगरनिगम बनाने की घोषणा भी की। हालांकि इसी दौरान कुछ युवाओं ने उन्हें काले झंडे भी दिखाए। लेकिन पुलिस ने मंच तक पहुंचने से पहले उन्हें खदेड दिया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के साथ केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी थे। मुख्यमंत्री शिवपुरी में जनसेवा अभियान के तहत हितग्राहियों को लाभ वितरण करने के लिए आए थे।मंच से ही मुख्यमंत्री ने शिवपुरी नगर पालिका के सीएमओ शैलेश अवस्थी और पिछोर के खाद्य आपूर्ति अधिकारी नरेश मांझी को निलंबित करने के निर्देश दिए।

बहन पर भद्दे कमेंट का विरोध करने पर आरोपितों ने भाई-बहन से की मारपीट

गुना । मृगवास थानाक्षेत्र में बहन के इंस्टाग्राम आइडी पर फोटो अपलोड कर अश्लील कमेंट कराए, जिस पर भाई ने आपत्ति की, तो आरोपित चारों युवकों ने पहले लाठी व लात-घूसों से भाई की मारपीट की। बहन बचाने आई, तो उसके साथ भी मारपीट की। पुलिस ने मामला दर्ज कर विवेचना में लिया है।पुलिस के अनुसार फरियादी भाई ने चाचा गोवर्धन मीना एवं बहन के साथ थाना आकर रिपोर्ट दर्ज कराई। इसमें कहा कि 30 नवंबर को शिवम मीना ने अपनी इंस्टाग्राम आइडी पर बहन का फोटो पोस्ट करके अश्लील कमेंट किया। इसके बाद मैं इंदौर से अपने घर आया और 12 दिसंबर की शाम छह बजे शिवम से पूछा कि मेरी बहन का फोटो और अश्लील कमेंट क्यों किए, जिस पर शिवम गालियां देकर चला गया। इसके बाद शाम 6.30 बजे मैं अपने घर पहुंचा, तो शिवम, बबलू, नीतेश और सोनू मीना चारों हाथों में लाठियां लेकर घर में अंदर घुस आए और गालियां देने लगे। मना करने पर शिवम ने लाठी मारी एवं सोनू, नीतेश, बबलू ने लात-घूसों से मारपीट की। इस दौरान मेरी बहन बचाने आई, तो उसकी भी लात-घूसों से मारपीट कर दी। मेरी मां और पिताजी ने मुझे बचाया। इस दौरान चारों लोग कह रहे थे कि आज तो बच गया, लेकिन आगे हमारे बारे में कोई बात की, तो जान से मार देंगे।

अस्पताल के शौचालय में चार दिन पड़ा रहा शव, पांच नर्सिंग आफिसर निलंबित, प्रभारी डाक्टर सहित सिविल सर्जन को नोटिस

शिवपुरी । जिला अस्पताल के सर्जरी वार्ड में बने शौचालय में सोमवार को एक मरीज देवीलाल शाक्य का शव मिलने के बाद कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने कडी कार्रवाई करते हुए सर्जरी विभाग की पांच नर्सिंग आफिसर को निलंबित कर दिया है। वहीं सर्जरी विभाग के प्रभारी चिकित्सक सहित सिविल सर्जन को कारण बताओ नोटिस दिया है।उल्लेखनीय है कि मरीज देवीलाल शाक्य चार दिन से लापता था। उसकी अस्पताल के शौचालय में मौत हो गई थी और चार दिन तक शव वहीं पडा रहा। मंगलवार को कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह, एसपी राजेश सिंह चंदेल, एडीएम विवेक रघुवंशी, एसडीएम गणेश जायसवाल, सीएमएचओ डा. पवन जैन आदि पहुंचे।मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डा. पवन जैन ने बताया कि देवीलाल जिला चिकित्सालय शिवपुरी में नौ दिसंबर को पेट में दर्द की शिकायत के कारण भर्ती हुआ था। 40 वर्षीय देवीलाल शाक्य पुत्र तेजाराम शाक्य निवासी घोसीपुरा कमलागंज का शव 12 दिसंबर को सर्जरी विभाग के शौचालय में पडा हुआ

मध्यप्रदेश में कही-कहीं बादल फिर डालेंगे डेरा, इनकी विदाई के साथ ही गिरेगा पारा

मध्यप्रदेश में सर्दी सुबह-शाम की बनी हुई है। हवाओं का रुख बदलने से तापमान में उछाल है। हालांकि 26 दिसंबर को एक तीव्र आवृत्ति वाला पश्चिमी विक्षोभ उत्तर भारत में प्रवेश करेगा। उसके प्रभाव से हवाओं के साथ नमी आने के कारण मध्य प्रदेश में बादल छाने के आसार हैं। जिसके चलते दिन के तापमान में गिरावट होने लगेगी। 28 दिसंबर के बाद तेज सर्दी पड़ सकती है। मौसम केंद्र की रिपोर्ट के मुताबिक बीते 24 घंटे के दौरान प्रदेश में मौसम शुष्क रहा। न्यूनतम तापमान उज्जैन संभागों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। रीवा, जबलपुर, सागर संभाग में सामान्य, शहडोल और ग्वालियर संभागों में सामान्य से अधिक रहे। प्रदेश का सबसे कम न्यूनतम तापमान खजुराहो में 8 डिग्री दर्ज किया गया। अगले 24 घंटों में मौसम शुष्क बना रहेगा। 25 दिसंबर से रात के तापमान में गिरावट होने लगेगी।मौसम विभाग के आंकड़ों की बात करें तो तापमान में मामूली बढ़त रही। पूर्वी मप्र में रात का पारा साढ़े तीन डिग्री तक उछला है। प्रदेश में सबसे ठंडा खजुराहो रहा। खजुराहो में 8, दतिया में 8.1, ग्वालियर में 8.2, नौगांव में 8.3, उमरिया में 8.5, रीवा में 9, पचमढ़ी में 9.8 डिग्री न्यूनतम तापमान रहा। अधिकतम तापमान में भी बढ़त दर्ज की गई। पूर्वी मप्र में दिन का पारा भी साढ़े तीन डिग्री तक उछला है। प्रदेश में सबसे गर्म खरगोन रहा। खरगोन में 32, दमोह में 31.5, खंडवा में 31.1, मंडला में 30.9, भोपाल में 30.5, नर्मदापुरम-रतलाम में 30.4, उमरिया में 30.1, इंदौर में 29.8, राजगढ़ में 29.6, उज्जैन में 29.5, छिंदवाड़ा में 29.3 डिग्री अधिकतम तापमान दर्ज किया गया। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो महाराष्ट्र पर एक प्रति-चक्रवात बना हुआ है, जिसके असर से हवाओं का रुख बार-बार बदल रहा है। इससे प्रदेश में तापमान में उतार-चढ़ाव बना हुआ है। हवा का रुख उत्तरी होने पर रात के तापमान में गिरावट होने लगती है। इसी तरह उत्तर-पूर्वी या उत्तर-पश्चिमी होने पर तापमान में बढ़ोतरी होने लगती है। फिलहाल एक कमजोर पश्चिमी विक्षोभ पाकिस्तान और उससे लगे जम्मू-कश्मीर पर एक्टिव है। जानकारों की मानें तो 26 दिसंबर को एक प्रभावी पश्चिमी विक्षोभ के उत्तर भारत में प्रवेश करने की संभावना है। उसके असर से पहाड़ों पर बर्फबारी एवं वर्षा भी होगी।

नपाध्यक्ष व उपाध्यक्ष सहित छह पार्षदों को भाजपा ने दिखाया बाहर का रास्ता

गुना, । गुना नगर पालिका अध्यक्ष के चुनाव में भाजपा के अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ मतदान कर पार्टी को नुकसान पहुंचाने वाले छह पार्षदों को भाजपा ने छह साल के लिए बाहर का रास्ता दिखा दिया है। अब नपा परिषद निर्दलीय अध्यक्ष के रूप में चलेगी।उक्त कार्रवाई भाजपा प्रदेश संगठन ने की है। क्योंकि, नपा चुनाव में भाजपा के 19 और कांग्रेस के 12 पार्षद जीतकर आए थे। जबकि छह पार्षद निर्दलीय जीतकर आए थे। इधर, भाजपा ने निर्दलिय पार्षदों को पंचायत मंत्री के माध्यम से भाजपा में शामिल करा दिया था। इस तरह भाजपा के पास 37 वार्डों के मुकाबले 25 पार्षद होकर बहुमत से आगे निकल गए थे। लेकिन जब अध्यक्ष का चुनाव हुआ, तो भाजपा प्रत्याशी को मात्र नौ मत मिले थे, जबकि निर्दलीय सविता अरविंद गुप्ता और कांग्रेस उम्मीदवार रश्मि रजनीश शर्मा को 13-13 मत मिले थे। इसके बाद लाटरी से चुनाव में सविता गुप्ता अध्यक्ष चुनी गई थीं। इधर, भाजपा को बहुमत के बाद भी हार मिलने के बाद पार्टी एक्शन के मोड में आ गई। सबसे पहले अध्यक्ष व उपाध्यक्ष समेत छह पार्षदों को नोटिस जारी किए गए। इसी क्रम में भाजपा प्रदेश महामंत्री भगवानदास सबनानी ने गुरुवार को सभी को छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया। इनमें नपाध्यक्ष व भाजपा जिला मंत्री सविता अरविंद गुप्ता, नपा उपाध्यक्ष धर्मेंद्र सोनी, पार्षद दिनेश शर्मा, सुमन लालाराम लोधा, बविता राजेश साहू, कैलाश धाकड़ शामिल हैं। भाजपा ने नगरपालिका चुनाव में सविता अरविंद गुप्ता को वार्ड-2 से टिकट दिया था। भाजपा के बैनर पर चुनाव जीतने के बाद ब्यावरा में पार्षदों की रायशुमारी की गई थी। इस दौरान भाजपा प्रदेश मंत्री रजनीश अग्रवाल, प्रभारी मंत्री प्रद्युमन सिंह तोमर, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री महेंद्र सिसोदिया के सामने अध्यक्ष का मैनेट तय किया गया था। इस दौरान भाजपा के ही कुछ पार्षदों ने बगावत कर सविता अरविंद गुप्ता को अध्यक्ष बनाने को लेकर बगावत कर दी थी। इस बगावत के बाद ब्यावरा से गुना भाजपा पार्षदों को लाया जा रहा था, तभी रास्ते में सविता अरविंद गुप्ता की बस चांचौड़ा की पूर्व विधायक ममता मीणा के गांव अजगरी पहुंच गई।ओ बगावत करने वाले पार्षदों ने प्रभारी मंत्री को जमकर खरी-खोटी सुनाकर सविता अरविंद गुप्ता को समर्थन देने की बात कही। साथ ही भाजपा छोड़कर कांग्रेस का दामन थामने की धमकी भी दी। इस प्रकरण के बाद भाजपा की एक बैठक पार्षदों के साथ गुना के निजी होटल में आयोजित की गई, जहां सुनीता रविंद्र रघुवंशी को मेंडेड जारी करने को लेकर जिला संगठन को कहा गया। पार्षदों को लेकर कलेक्ट्रेट बस पहुंची, जहां सविता अरविंद गुप्ता, सुनीता रविंद्र रघुवंशी चुनाव प्रक्रिया में शामिल होने पहुंचे।

चार महीने से एमडी मेडिसन गायब, ओपीडी में मरीजों की कतार, डाक्टरों की कुर्सियां खाली

गुना, । जिला अस्पताल में पदस्थ एमडी मेडिसन डा. सुनील यादव पिछले चार महीने से गायब हैं, जिससे मरीजों को खासी परेशानी हो रही है। उधर, डाक्टर के गायब होने की सूचना सिविल सर्जन ने पत्र के माध्यम से शासन को दी है, लेकिन डाक्टर ने काम करने से मना कर दिया है। वहीं शुक्रवार को ओपीडी के बाहर मरीजों की कतार लगी हुई थी, लेकिन चार डाक्टरों की कुर्सियां खाली प?ी थीं। मरीजों ने इसको लेकर नाराजगी जताई। खास बात यह कि इसके बाद भी डाक्टर 30 मिनट तक नहीं आए। शुक्रवार की सुबह नौ बजकर पचास मिनट का समय हो चुका है, जिला अस्पताल की ओपीडी के बाहर मरीजों की कतार लगी है। जबकि ओपीडी के हाल में आठ में से चार डाक्टरों की कुर्सियां खाली हैं। इधर, मरीज अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। वहीं जब नवदुनिया ने डाक्टरों की अनुपस्थिति का कारण स्टाफ से पूछा, तो रटा रटाया जवाब कि डाक्टर वार्ड के राउंड पर हैं, दिया गया। कुछ ऐसे ही हालात डाक्टरों के अन्य कक्षों में नजर आए। कई मरीज अपनी रिपोर्ट दिखाने के लिए ओपीडी के कक्ष के बाहर खडे दिखाई दिए, लेकिन डाक्टरों के न होने की वजह से उनको एक घंटे तक इंतजार करना पडा।

स्कूल प्रबंधन ने छात्र से लिखवाया मैं शैतान हूं, सबको परेशान करता हूं, मां को भी 3 घंटे धूप में बैठाया

शिवपुरी शहर के गुरुनानक स्कूल में अध्यनरत एक छात्र को स्कूल संचालक द्वारा मानसिक रूप से प्रताड़ित करने की शिकायत उसके स्वजनों ने बाल कल्याण समिति को दर्ज कराई है। शिकायत के आधार पर स्कूल संचालक को नोटिस जारी किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरूनानक स्कूल में कक्षा 9 में अध्यनरत के छात्र की मां ने बाल कल्याण समिति को शिकायत दर्ज कराई है कि कुछ दिन पहले स्कूल में बच्चों के आपसी झगड़े के मामले में स्कूल प्रबंधन ने एक तरफा कार्रवाई करते हुए उसके बेटे से यह लिखवाया है कि मैं

शैतान हूं और मेरे कारण सब परेशान रहते हैं।उससे यह लिखवाने का प्रयास किया गया कि अगर बच्चा मर जाए तो परिवार की ही जिम्मेदारी होगी। बच्चे को एक तरफा स्कूल से निष्काषित कर उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित किया गया है। शिकायत के आधार पर बाल कल्याण समिति ने गुरूनानक स्कूल प्रबंधन के नोटिस जारी किया है। शिकायत में बच्चे को धूप में खड़ा करने और उसकी मां को स्कूल बुलाकर तीन घंटे तक धूप में बिठाए जाने का आरोप भी लगाया गया है।आरोप यह भी है कि स्कूल प्रबंधन ने बच्चे को यहां तक कह दिया है कि आप सिर्फ परीक्षा देने के लिए स्कूल आओगे। इसके अलावा पड़ने के लिए आपको स्कूल आने की कोई आवश्यकता नहीं है। स्कूल प्रबंधन का कहना है कि बच्चे को कुछ दिन के लिए निष्काषित किया गया है। बच्चे से सिर्फ इसलिए लिखवाया गया है कि बच्चा आगे से इस तरह की हरकत न करे। बच्चा आए दिन अपने स्कूल के बाहर के दोस्तों को बुलवा कर स्कूल के बच्चों की पिटाई लगवाता है। इस बात के पूरे वीडियो आदि साक्ड़य स्कूल प्रबंधन के पास मौजूद हैं।

अतिक्रमण हटाने गए वन अमले पर पथराव, डिप्टी रेंजर सहित सात घायल

गुना । जिले के बीनागंज वन क्षेत्र के पागीघटा में शुक्रवार की सुबह 11 बजे वन भूमि से अतिक्रमण हटाने पहुंचे वन अमले पर अतिक्रमणकारियों ने पथराव कर दिया, जिससे वाहन क्षतिग्रस्त हो गया और डिप्टी रेंजर सहित सात वनकर्मी घायल हो गए। इनमें गंभीर रूप से घायल डिप्टी रेंजर को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।वन विभाग की टीम को शुक्रवार की सुबह सूचना मिली थी कि पागडीघटा में वनभूमि पर दो दर्जन से अधिक भील-बंजारों ने कब्जा कर रखा है। यह अतिक्रमण हटाने वन अमला पहुंचा, तो भील-बंजारों ने पथराव कर दिया। करीब आधे घंटे तक हुए पथराव से डिप्टी रेंजर मुरारीलाल शर्मा और अन्य छह वनकर्मी घायल हो गए।इस संबंध में वनपाल सौरभ द्विवेदी ने बताया कि बीनागंज वनपरिक्षेत्र से करीब 15 किमी दूर वन विभाग की टीम अतिक्रमण हटाने के लिए पहुंची थी। यहां पर दो दर्जन से अधिक अतिक्रमणकारियों ने पहले वन कर्मियों के साथ गाली गलौच की। इसके बाद पथराव कर दिया, जिससे वन विभाग का वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। साथ ही पत्थर लगने से डिप्टी रेंजर शर्मा और अन्य कर्मचारियों को चोटें आई हैं पुलिस थाने में भील और बंजारों के खिलाफ मामला दर्ज कराया जा रहा है।

सांसद संध्या राय ने केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से की मुलाकात

पंकज त्रिपाठी स्टेट हेड
दैनिक पुष्पांजली टुडे

सांसद संध्या राय ने श्योपुर से चिरगांव तक स्वीकृत 592 राष्ट्रीय राजमार्ग लहार के पास इमली रोड से उरई तक राष्ट्रीय मार्ग का एक्सटेंशन स्वीकृत कराने के लिए सौंपा मांग पत्र

दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य भिण्ड दतिया सांसद श्रीमती संध्या राय ने लोकसभा सदन में केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात कर अनेक विकास कार्यो पर चर्चा की जिस पर उन्होंने आश्वासन दिया कि आपकी मांगों का निराकरण कर दिया जाएगा।भाजपा सांसद संध्या राय ने केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात करते हुए मांग पत्र के माध्यम से कहा कि सा.का.भि/21 - 22/488 दिनांक 31/05/2021 से आपके संज्ञान में लाया गया था कि भारत सरकार द्वारा हाल ही में मध्यप्रदेश राज्यों के लिए जिला श्योपुर से उत्तर प्रदेश के चिरगांव तक राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 552 स्वीकृत किया गया है जो मेरे संसदीय क्षेत्र से होकर गुजरता है क्षेत्र के ग्राम इकमिली तहसील लहार जिला भिंड से उरई तक जहां झांसी कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 552 का एक्सटेंशन स्वीकृत कराने की जनता ने मांग की है इससे ग्वालियर से कानपुर के लिए सबसे कम दूरी का मार्ग व्यावसहायक गतिविधियों के लिए क्षेत्रीय वासियों को उपलब्ध हो जाएगा इसी मार्ग के बीचो-बीच में प्रमुख धार्मिक स्थल श्री रावतपुरा सरकार धाम लहार भी पड़ता है जहां आए दिन हजारों श्रद्धालु का आना जाना रहता हैउन्होंने केंद्रीय मंत्री गडकरी से आग्रह किया उपरोक्त राष्ट्रीय राजमार्ग 552 में मध्य प्रदेश राज्य के इकमिली तहसील लहार जिला भिंड से उरई तक राष्ट्रीय राजमार्ग 552 का एक्सटेंशन स्वीकृत करने गतिविधियों हेतु सबसे कम दूरी का मार्ग उपलब्ध हो सके।उन्होंने कहा कि हमारे लोकसभा क्षेत्र की प्रमुख मांगे हैं और इन समस्याओं का निराकरण अतिशीघ्र कर स्वीकृति प्रदान करें ताकि भिंड लोकसभा क्षेत्र विकास को आगे गति प्रदान कर सकें।

भाजयुमो खिलता कमल के तहत लहार में भी कमल खिलाएं : विक्रांत सिंह

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। भारतीय जनता पार्टी की युवा शाखा भाजयुमो लहार द्वारा युवाओं में प्रेरणा जगाने के लिए नगर के बांके बिहारी गार्डन में खिलता कमल के तहत कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसने बतौर मुख्यअतिथि भाजयुमो के जिलाध्यक्ष विक्रांत सिंह कुशवाह ने कहा कि जब जब लहार कार्यक्रम में आया हूँ युवाओं की ऊर्जा देखते ही बनती है और जो उत्साह लहार के युवाओं में देखने को मिलता है। इस अवसर पर मोर्चा के जिला महामंत्री अतिराज सिंह नरवरिया विशेष रूप से मौजूद थे।भाजयुमो जिलाध्यक्ष श्री कुशवाह ने कहा की आगामी मिशन 2023 विधानसभा चुनाव को मध्य नजर रखते हुए खिलाता कमल के माध्यम से हर बूथ पर कमल खेले इसके लिए कार्यकर्ता लहार से अबकी बार भाजपा का विधायक बनाने के लिए युवा तरुणाई जागृत होकर कांग्रेस को उखाड़ फेंके। और मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाकर लहार को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का काम करें लहार क्षेत्र के हर बूथ पर 1010 कार्यकर्ताओं की संघर्षशील युवाओं की टीम गठित की जाए और वह अपने बूथ को मजबूती देते हुए भारतीय जनता पार्टी का कमल खिला कर कांग्रेस की तानाशाही को चकनाचूर कर भाजपा की विजय पताका फैलाएं।इस मौके पर युवा मोर्चा मण्डल अध्यक्ष अमित तिवारी छोटू ने कहा कि लहार में हमारे साथ चलने बाले बुजुर्ग जो हमेशा हमे प्रोत्साहित करते है और सही कार्य की रूप रेखा रखबाते है ये सब उन्ही के आसीर्बाद के परिणामो का नतीजा है बस उन कार्यो का श्रेय मात्र मुझे मिल जाता है इस मौके पर मुख्यरूप से जिला कोषाध्यक्ष भाजपा मनोज शास्त्री जिला अध्यक्ष सांस्कृतिक प्रकोष्ठ संजीव नायक,जिला उपाध्यक्ष किसान मोर्चा संजीव चौधरी,युवा मोर्चा मे जिला सह सोशल मीडिया प्रभारी आशीष गुप्ता,लहार भाजपा मंडल के अध्यक्ष जबर सिंह कुशवाह,लहार किसान मोर्चा के मंडल अध्यक्ष रणवीर राठौर,लहार महिला मोर्चा की अध्यक्ष नीलम शर्मा,एवं युवा मोर्चा मिहोना के मंडल अध्यक्ष डॉ.पुष्पेंद्र कुशवाह,युवा मोर्चा मछन्ड के मण्डल अध्यक्ष इंद्रभान सिंह राजावत,असवार के मंडल अध्यक्ष रामगोपाल यादव,किसान मोर्चा असवार के मंडल महामंत्री देवानंद नायक,लहार युवा मोर्चा के मंडल महामंत्री आशीष छोटू शुक्ला ,जनक दोहरे,उपाध्यक्ष पुष्पेंद्र चौधरी श्यामपुरा,अतुल चौधरी , कृष्णा बघेल, हरेंद्र प्रजापति,सोशल मीडिया प्रभारी लवकुश चौहान, अंश समधिया ,नीति एवं शोध प्रभारी नितेश शर्मा ,अभय राजावत मिहोना युवा मोर्चा के मण्डल महामंत्री रोहित श्रीवास्तव,राजदीप भारद्वाज ,वासुदेव बघेल ,अमर सिंह महाते , तिलक सिंह बघेल , असवार युवा मोर्चा के मंडल उपाध्यक्ष गिरजेश त्यागी ,अमित त्यागी ,हिमांशु प्रजापति,रिशव गुप्ता,हिमांशु प्रजापति ,अमित यादव , बीरु श्रीवास्तव ,अमिता आदि युवा मोर्चा विधानसभा लहार के कार्यकर्तागण उपस्थित रहे ।

पूर्व विधायक रमेश सक्सेना काआज कार्यकर्ता मनाएंगे जन्म दिन

ग्रामीण क्षेत्र से निकाली जाएगी विशाल वाहन रैली

सीहोर। शनिवार को पूर्व विधायक और सहकारिता नेता श्री रमेश सक्सेना का जन्म दिन उनके कार्यकर्ता और समर्थक धूमधाम से मनाएंगे। इसकी तैयारियां करीब एक पखवाड़े से समर्थकों द्वारा की जा रही थीं। इस मौके पर उनके समर्थकों द्वारा नगर में स्वागत द्वार और जगह जगह पोस्टर लगाए गए हैं। सीहोर विधान सभा के गांवों में उनके समर्थकों में खासा उत्साह देखा जा रहा है।पूर्व विधायक और कांग्रेस नेता श्री सक्सेना अपने जन्म दिन पर दिन की शुरूआत चिंतामन श्री गणेश भगवान के दर्शन के साथ करेंगे। उसके बाद वह कस्बा स्थित हनुमान फाटक मंदिर में दर्शन कर पूजा अर्चना करेंगे। यहां वह नेहरू कालोनी स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर पहुंचकर दर्शन करेंगे। इस दौरान उनके समर्थकों द्वारा कई स्थानों पर स्वागत किया जाएगा। जन्मदिन के अवसर पर मुख्य कार्यक्रम लुनिया चौराहा स्थित यशराज गार्डन में आयोजित किया जाएगा।

निकलेगी विशाल वाहन रैली-इस मौके पर ग्रामीण क्षेत्र से हजारों की संख्या में उनके समर्थक वाहन रैली निकालेंगे। वाहन रैली उनके गृह ग्राम

बरखेड़ा हसन से शुरू होकर अहमदपुर, दोराहा होते हुए भोपाल नाका, इंग्लिशपुरा, कोतवाली चौराहा, मुख्य बाजार होते हुए तहसील चौराहे से होकर यशराज गार्डन पहुंचेगी। इस रैली का नेतृत्व श्री सक्सेना के पुत्र एवं जिला पंचायत सदस्य शशांक सक्सेना करेंगे। रैली का समापन यशराज गार्डन में होगा। यहां पर पूर्व विधायक श्री सक्सेना कार्यकर्ताओं को संबोधित करेंगे।

राजनीति के केन्द्र बिन्दु रहे श्री सक्सेना-सीहोर विधानसभा के ग्राम बरखेड़ा हसन में एक साधारण किसान परिवार से निकल कर जिले की राजनीति में लंबे समय से श्री सक्सेना केन्द्र बिन्दु बने हुए हैं। उन्होंने छात्र जीवन से अपने राजनैतिक सफर शुरूआत की और विधानसभा तक का सफर तय किया। कालेज और बरकतउल्लाह यूनीवर्सिटी की छात्र राजनीति में विभिन्न पदों पर रहे। पहली बार वह निर्दलीय प्रत्यासी के रूप में विजयी होकर विधानसभा पहुंचे। वह चार बार विधायक रहे। करीब पांच दशक से वह राजनीति में उसी उमंग और उत्साह से कार्यकर्ताओं और आमजनों की समस्याओं को उठाते रहते हैं।

जीतू राजपूत जिला अध्यक्ष एवं महेंद्र पटेल जिला सचिव मनोनीत

नवनिर्वाचित जनपद सदस्यों की जिला कार्यकारिणी गठित

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे
बालाघाट

मध्यप्रदेश में हाल ही में संपन्न हुए त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव अंतर्गत विजयी हुए जनपद सदस्यों के द्वारा बालाघाट जिले के जनपद सभागार में बैठक आहूत कर संगठन तैयार किया गया, जिसमें कांग्रेस पार्टी के कद्दावर नेता जितेंद्र सिंह राजपूत जनपद सदस्य को संगठन का जिला अध्यक्ष बनाया गया है। एवं भारतीय जनता पार्टी के पुर्व जिला महामंत्री , जिला कोआपरेटिव बैंक के वाइस चेयरमैन तथा पंवार समाज संगठन लांजी के अध्यक्ष महेंद्र पटेल जनपद सदस्य को जिला सचिव पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस दौरान जनपद सदस्यों ने अपने अधिकार दिए दिलाए जाने की मांग को लेकर जनपद सभागार में बैठक आहूत की, जिसमें बालाघाट जिले की समस्त 10 जनपद पंचायतों के कुल 220 में से 183 सदस्यों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की। इस दौरान जनपद पंचायत बालाघाट के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष भी मौजूद रहे। उपस्थित सभी जनपद सदस्यों के द्वारा दलगत भावना से ऊपर उठकर जिला अध्यक्ष एवं जिला सचिव मनोनीत किया गया। वहीं उपस्थित जनपद सदस्यों के साथ कार्यकारिणी के विस्तारीकरण को लेकर चर्चा हुई। जिसमें जिले के समस्त जनपद पंचायत क्षेत्र के सदस्यों को शामिल कर उन्हें जिम्मेदारी सौंपी जाने की बात कही। जनपद सदस्य जिला संगठन ने मांग की है कि उन्हें स्वतंत्र अधिकार संपन्न बनाया जाएं। उनके क्षेत्र के लिए विकास के लिए निधि नियत की जाए। जनपद सदस्यों का चुनाव कराया जा रहा है लेकिन उनके पास पावर नहीं दिया जा रहा है। क्षेत्र में वह 3 से 5 पंचायतों के बीच चुनकर आते हैं ऐसे में जनपद सदस्यों की जिम्मेदारी और अधिक बड़ी होती है,किंतु उन्हें अधिकार संपन्न नहीं बनाया जा रहा है इसलिए उन्होंने अधिकार संपन्न बनाए जाने की मांग की है। वहीं उन्होंने आगे भी कहा कि ना कोई भाजपा और ना कोई कांग्रेसी अन्य बस सभी का एक उद्देश्य की जनपद सदस्यों के हक व अधिकार की लड़ाई लड़ी जाए और सब मिलकर दलगत भाव से ऊपर उठकर कार्य करें। सर्व समिति से जनपद सदस्य जिला संगठन का गठन किया गया है जिन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई है वे सभी मिलकर संगठन के माध्यम से कार्य करेंगे।

महेंद्र पटेल को बधाइयां देने शुभचिंतकों का लगा तांता-लांजी जनपद अंतर्गत क्षेत्र क्रमांक 13 से चुने गए जनपद सदस्य महेंद्र पटेल को जनपद सदस्य जिला संगठन में जिला सचिव मनोनीत किए जाने पर उनके शुभचिंतकों के द्वारा जिम्मेदारी मिलने पर बधाइयां प्रेषित करने दिन भर तांता लगा रहा। वहीं हितैषियों ने फोन काल कर बधाइयां दी। लांजी जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती अर्चना रेवेन्द्र खोंगल, उपाध्यक्ष अजय अवसरे, सपना मस्करे,

रेवाजी करहाटकरे, गोवर्धन घोरमारे, श्यामलाल बेदरे, निलकंठ ठाकरे, टुमनलाल घोरमारे, सुरेश नारनौरे, युवराज पटले, योगेश कुराहे, महेश चौधरी, दिनेश लाडे श्रीमती कविता मातरे, पदमा कबिरे, रेखा बाई मडामे, भुनेश्वरी कबिरे, भारती चुटे, मीरा लिल्हारे, शीतल बनोठे, चित्ररेखा भोयर, सरस्वती बारेकर, नर्मदा मर्सकोले इन सभी जनपद पंचायत सदस्यों के अलावा पंवार समाज के सभी स्वजातीय बंधुओं एवं क्षेत्रवासियों ने शुभकामनाएं दी हैं।

पवन रंगारे ने पुर्ण की पीएचडी

संघर्षमय जीवन से लड़कर पुरी की पीएचडी की उपाधि

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे
बालाघाट

पीएचडी एक स्नातकोत्तर डॉक्टरेट की डिग्री है, जो उन छात्रों को प्रदान की जाती है जो अपने विषय में ज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान देने वाले एक प्रमुख शोध को पूरा करने की पुर्णतः कोशिश करते है। ÷विद्या वाचस्पति÷ की डिग्री सभी विषयों में उपलब्ध हैं और आम तौर पर एक व्यक्ति को प्राप्त होने वाली सर्वोच्च शैक्षणिक डिग्री का उच्चतम स्तर है। और यही डिग्री बालाघाट जिले के छात्र पवन रंगारे ने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है इनका शिक्षा शास्त्र विषय में शोध कार्य ÷ नक्सल प्रभावित क्षेत्र के अंतर्गत माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक, सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ÷ विषय पर पूर्ण किया गया है। पवन रंगारे ने अपना शोध कार्य निर्देशक डॉ ज्योत्स्ना खरे प्राचार्य एनईएस शिक्षा महाविद्यालय भोपाल होशंगाबाद, सह निर्देशक डा हेमंत खण्डई विभाग अध्यक्ष सतत शिक्षा विभाग भोपाल एवं डा असरारूल गनी के मार्गदर्शन में पूर्ण किया।पवन रंगारी ग्राम बहियाटिकुर पोस्ट बोरी

तहसील लालबर्रा जिला बालाघाट के निवासी हैं। आपके पिताजी स्वर्गीय भरत लाल रंगारे, मां जानकी बाई रंगारे, पत्नी रीना रंगारे एवं 2 नन्ही बेटियां प्राव्या एवं प्रिशा रंगारे है। इनकी प्राथमिक शिक्षा अपने ग्राम के प्राथमिक स्कूल में की, वहीं माध्यमिक शिक्षा बल्हारपुर तथा हाई स्कूल की शिक्षा उत्कृष्ट विद्यालय लालबर्रा से बीए एवं एमए अंग्रेजी साहित्य से बीएड तथा एमएड सरदार पटेल कॉलेज ऑफ़ टेक्नोलॉजी बालाघाट से पुर्ण की। सन 2011 से 2018 तक सरदार पटेल कॉलेज में शिक्षा संकाय में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्य किया, इसी दौरान 2016-17 में पीएचडी प्रवेश परीक्षा पास कर शोध कार्य प्रारंभ किया। 2018 की शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में अंग्रेजी विषय में उच्च माध्यमिक शिक्षक की परिक्षा उत्तीर्ण कर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मटकुली जिला नर्मदा पुरम में उच्च माध्यमिक शिक्षक के पद पर पदस्थ होकर वर्तमान में कार्यरत है। लगभग 5 वर्ष के समयावधि में 10 दिसंबर 2022 को विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में पीएचडी वाइ-वां संपन्न हुआ। पीएचडी की उपाधि प्रदान हेतु बरकतउल्ला विश्वविद्यालय द्वारा 20 दिसंबर 22 को अधिसूचना का प्रकाशन किया गया। और पवन रंगारे को पीएचडी की उपाधि प्राप्त हुई।

भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष जिले के दौरे पर

पुष्पांजलि टुडे। संवाददाता। पाली राजस्थान

पाली। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्ष अल्का मूंदड़ा शुक्रवार को पाली प्रवास पर रही।इस दौरान उन्होंने महिला मोर्चा की पाली जिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों व सदस्यों के साथ ही सभी मंडल अध्यक्षों व महामंत्रियों को संबोधित करते हुए अधिकाधिक महिलाओं को भाजपा की विचारधारा से जोड़ने तथा संगठन की मजबूती के लिए उनकी भागीदारी को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। मूंदड़ा ने राज्य में आगामी विधनसभा चुनाव को देखते हुए सभी कार्यकर्ताओं को संगठित व सक्रिय होकर संगठन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनता के बीच पंहुचकर केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार करने के साथ ही राज्य में सत्तारूढ कांग्रेस सरकार की विफलताओं को उजागर करने का आह्वान किया।प्रदेशाध्यक्ष ने संगठन के आगामी कार्यक्रमों की चर्चा करते हुए कहा कि इस समय माहौल कांग्रेस के खिलाफ बना हुआ हैं। आमजन राज्य सरकार से त्रस्त हैं। आगामी चुनाव में भाजपा के सता में आने की पूर्ण संभावना हैं,इसके लिए कार्यकर्ताओं को कमर कसकर तैयार रहने की जरूरत हैं। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुरेश चौधरी महामंत्री सुनील भंडारी, जिला कोषाध्यक्ष रामकिशोर साबू तथा महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष मनोहरकंवर ने भी संबोधित किया। इसके पूर्व महिला मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष अल्का मूंदड़ा का पाली पंहुचने पर जिलाध्यक्ष मनोहरकंवर के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी के साथ स्वागत किया।इस मौके महिला मोर्चा की जिला उपाध्यक्ष सुमन सेन,महामंत्री भगवतीकंवर नाथावत, रेखा परिहार,कोषाध्यक्ष प्रमिला परमार, जिला मीडिया प्रभारी मनीषा राखेचा, दीपिका शर्मा, नीतू अमरनानी, भाग्यवती गहलोत, सरोज परमार, निर्मला भाटी, रजनी कुमावत ,सुशीला चौधरी, पुष्पा भाटी, इंदिरा कवर, पूनम तिवारी, लक्ष्मी सिसोदिया रेखा कंवर भाटी, विजयलक्ष्मी मंजू मिश्रा ,लक्ष्मी बंजारा, वीणा रावल ,पूर्णिमा चौधरी, लीलावती गुर्जर ,रश्मि त्रिवेदी ,रजनी कुमावत , बसंती कवर,निर्मला भाटीतथा मंडल अध्यक्ष व महामंत्री , सुरेश चौधरी,महेश सोनी, मुकेश भंसाली,सहित कई महिला कार्यकर्ता उपस्थित थी।

रूपावास विधालय मे प्रशिक्षण का आयोजन

पुष्पांजलि टुडे। संवाददाता पाली राजस्थान

पाली राजस्थान। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रुपावास चारणान में एसडीएमसी व एसएमसी का गैर आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। दक्ष प्रशिक्षक के रूप में संस्था प्रधान नीतू जालवाल द्वारा एसडीएमसी एसएमसी के उत्तरदायित्व एवं भूमिका के बारे में जानकारी दी। आज हुए प्रशिक्षण में रुपावास वह उसके राजस्व गांव के विद्यालय व कमेटी के सदस्यों सहित कुल 42 सदस्यों ने भाग लिया। जिसमें भाजपा जिला सहसंयोजक पायल पटेल, सरपंच सुरेश बंजारा ,विधायक प्रतिनिधि हरिभाई पटेल, सोनाराम घॉची, अनिल नामा गजेंद्र कुमार सेन अनुपम शर्मा जया व्यास सुनीता राजपुरोहित भवानी सिंह आखवत चौथा राम महावीर प्रसाद शिल्पा जैन विजयलक्ष्मी दवे प्रमिला पाटनेचा रामजीवन सुथार सुमन वैष्णव भावना भटनागर वीणा त्रिवेदी अशोक कुमार दवे ,भगवत सिंह जोधा गिरधारी लाल तुलसाराम सोलंकी इस प्रशिक्षण में उपस्थित रहे।

दमोह में शंकर जी की मूर्ति तोड़ने पर आक्रोश, आरोपित शमशेर खान गिरफ्तार

दमोह । कोतवाली थाना अंतर्गत बिलवारी मोहल्ला में पीपल पेड़ के नीचे भगवान शिव जी के मंदिर में विराजमान शिव जी की मूर्ति तोड़े जाने पर हिंदूवादी संगठनों ने पहुंचकर काफी विरोध जताया है। बताया गया है कि यहां पर अन्य समुदाय के एक व्यक्ति द्वारा शिव जी की मूर्ति तोड़े जाने के बाद जैसे ही इस बात की जानकारी हिंदूवादी संगठनों एवं पुलिस को लगी

डिजिटल बाबा ने महेश्वर में हरिदासजी स्मारक पर समाधिस्थल पर किया पूजन

पुष्पाजंली टुडे/नारायणलाल सेंणचा

मध्यप्रदेश -महेश्वर 22 दिसंबर गुरुवार को माँ नर्मदा के किनारे नृसिंह टेकरी स्थित दीवान श्री हरिदासजी स्मारक पर गुरुवार को डिजिटल बाबा (स्वामी रामशंकर) का अपनी पैदल नर्मदा परिक्रमा के 49-वे दिन आगमन हुआ। आईपंथ और सिर्वी समाज के दसवें धर्मगुरु दीवान श्री हरिदासजी की नरसिंह टेकरी स्थित समाधि एक सिद्धस्थल है, जहां अहिल्याबाई होलकर द्वारा स्मारक बनवाया गया था। स्वामी रामशंकर द्वारा नर्मदा के किनारे स्थित प्राचीन एवं आध्यात्मिक महत्व के स्थानों को उजागर करने तथा सेवा भाव से किए जा रहे कार्यो को समाज के समक्ष लाने के लिए डिजिटल संचार माध्यमों का भी उपयोग किया जाता है इसलिए वे डिजिटल बाबा के नाम से ख्यात हो रहे हैं। इसी क्रम में आप हरिदासजी स्मारक पर आए. समाजजनों के साथ डिजिटल बाबा द्वारा यहाँ हरिदासजी समाधि पर पूजन एवं आईमाता तथा माँ नर्मदा की आरती भी की गयी. यह लोक मान्यता है कि ई.सन 1785 में आईपंथ के दसवें दीवान श्री हरिदासजी का महेश्वर आगमन हुआ था और उन्होंने इष्ट देवी आईमाता के प्रताप से वेगवान

उफनती नर्मदा को अपने घोड़े पर बैठकर पानी पर चलते हुए पार कर लिया था. अहिल्याबाई इनसे बड़ी प्रभावित हुई. हरिदासजी सच्चे आईभाक्त एवं संत प्रवृति के थे. उन्हें अपनी लोक प्रशंसा पसंद नहीं थी इसलिए वे इसी स्थान पर योगबल से देह त्याग कर समाधिस्थ हो गए. साथ ही स्वामीभक्त घोड़े नें भी अपने प्राण त्याग दिए.आईमाता की आरती में भी उल्लेख आता है कि हरिदासजी पाणी पर चाल्या, अचरज करियो अहिल्याबाई. अहिल्याबाई द्वारा उनकी स्मृति में एक छतरी का निर्माण कराया गया था. यह स्थान सिर्वी समाज एवं आईपंथ के लिए आज भी आस्था तथा श्रद्धा का केंद्र है। इसके जीर्णोद्धार के लिए प्रयास भी किए जा रहे हैं। इस अवसर पर सिर्वी समाज हरिदासजी स्मारक ट्रस्ट के संरक्षक देवानंद मुलेवा, पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश परिहार, प्रमुख ट्रस्टी भगवान जमादारी, राधेश्याम सेप्टा, ट्रस्ट के महासचिव दिलीप पटेल, इन्दर सेप्टा, राजेश बर्फा, धार सिर्वी समाज अध्यक्ष राधेश्याम मुकाती, ट्रस्ट उपाध्यक्ष लक्ष्मण परिहार, एच एल. देवड़ा, अशोक राठोर, जितेन्द्र लच्छेटा गोपाल आर्य गंधवानी, के साथ मनावर, एवं बड़वानी तथा बडवाह क्षेत्र से बड़ी संख्या में सिर्वी समाजजन उपस्थित थे।

वनांचल ग्रामों में आदर्श दानपात्र सेवा समिति ने मनाया राष्ट्रीय किसान दिवस, जरूरतमंद को बांटी सामग्री

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर चालीसबोड़ी पंचायत ग्राम पालागोंदी जो एक संवेदनशील क्षेत्र एवं

वनांचल ग्राम जो कि विशाल पहाड़ियों से घिरा हुआ क्षेत्र है। जहां निवासरत बैगा एवं आदिवासीयों के 65 परिवारों को राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आदर्श दानपात्र सेवा समिति के द्वारा जन सहयोग से कम्बल एवं गर्म कोट का वितरण किया गया। साथ ही साथ ग्राम वासियों से कृषि, स्वास्थ्य एवं मुख्य रूप से बच्चों की शिक्षा के विषय पर खुलकर विस्तृत चर्चा परिचर्चा भी की गई। इस कार्यक्रम में ग्राम सरपंच श्रीमती सुनीता रेखलाल मरकाम, सोनका बाई वरकडे, महेश मेश्राम, रामप्रसाद जी एवं आदर्श दानपात्र सेवा समिति के सदस्य उपस्थित रहे एवं दानदाता सरला देवी चोर्डिया, बृजबिहारी डोंगरे, डेनी डोंगरे, प्रहलाद पाटिल सीईओ ललिता मेश्राम, आशीष बारमाटे, प्रकल्प भोरजार का आदर्श दानपात्र सेवा समिति ने सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया हैं।

सम्पादकीय

महंगाई को गंभीरता से नहीं ले रही सरकार

यह सब स्वीकार करते हैं कि स्थिति बड़ी ही गंभीर है, परंतु न तो वित्त मंत्री ने और न ही शासक दल ने इन समस्या के मूल में जाने का प्रयास किया है। वस्तुत- इसे कांग्रेस सरकार ने शुरू से अब तक की अपनी पंचवर्षीय योजनाओं तथा अन्य नीतियों से एकाधिकार प्राप्त लोगों की ही समृद्धि की है और कर रही है, परंतु बात यह समाजवाद की करती है । दो दिन पहले ही उद्योग मंत्री की उपस्थिति में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ने वक्तव्य दिया कि देश के 75 बड़े उद्योग गृहों में से 66 उनके राज्य में हैं और उन्हें बड़ने दिया जाना चाहिए, ताकि बेरोजगारों को रोजगार मिले, क्षेत्रों का विकास हो और उत्पादन बढ़े। फिर भी हमारी अर्थव्यवस्था इस प्रकार क्यों चौपट हो रही हैड़ क्या कभी इसके कारणों की खोज की गई है। यह सरकारी नीति की अनुपयुक्तता के कारण ही तो है कि देश में निरंतर बेरोजगारी बड़ रही है, कीमतें बड़ रही हैं, काला धन बड़ रहा है और धन कुछ ही लोगों के कब्जे में जा रहा है। आज देश में 75 करोड़ रुपये काला धन विद्यमान है। फिर सर्वेक्षण से पता चलता है कि हरित क्रांति के फलस्वरूप ग्रामीण लोगों के मध्य अधिक ध्रुवीकरण हुआ है, अधिक लोग भूमिहीन हुए हैं तथा बेरोजगारी बड़ी है। आज बड़ी-बड़ी कंपनियों के स्वामी बैंकों से बड़ी-बड़ी राशियां प्राप्त कर रहे हैं तथा अपने पूंजीगत उत्पादन के लिए सभी स्रोतों का लाभ उठा रहे हैं। सारी खाद्यान्न मंडियां उनके काबू में हैं। सरकार, मंत्रालय, विभाग, सभी उनके नियंत्रणाधीन होते जा रहे हैं। यही मूल समस्या है।

कीमतों में वृद्धि तथा आर्थिक संकट से सारा देश संतप्त है और यह संकट निरंतर बड़ता जा रहा है। साथ ही, असंतोष के कारण लोगों में धैर्य भी समाप्त होता जा रहा है। दिल्ली में रोज बस जलाई जा रही है। एक दिन सरकार महंगाई रोकने का आह्वान करती है, तो दूसरे ही दिन समाचार पत्रों में छपता है कि चीनी और अनाज के भाव बड़ गए हैं, अन्य जरूरी वस्तुओं की कीमतें बड़ने के समाचार भी नित्य आते हैं। वित्त मंत्री कहते हैं कि निकट भविष्य में कीमतों में गिरावट आएगी, परंतु स्थिति कुछ भिन्न ही है। अत- अब किसी प्रकार की सुस्ती या काहिली की गुंजाइश नहीं रह गई है। उपभोक्ताओं को उचित कीमत पर वस्तुएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए। सरकार ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि भारत में 50 प्रतिशत लोग भुखमरी स्तर से भी निम्न स्तर पर जीवनयापन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री के साथ अपनी बैठक में मैंने कहा था कि सरकार मामले की गंभीरता को नहीं पहचान रही है। वित्त मंत्री के वक्तव्य से मेरी बात सिद्ध होती है कि स्थिति गंभीर है।...तर्क दिए जा रहे हैं कि सारे देश में ही कीमतें बड़ रही हैं और सरकार का इसमें कोई दोष नहीं है। यदि इस बात को स्वीकार कर लिया जाए, तो फिर सरकारी नीति में कोई परिवर्तन करने की जरूरत नहीं रह जाती है । सरकार की बात को गलत सिद्ध करने के लिए मैं अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के प्रतिवेदन का उल्लेख करना चाहता हूं। प्रतिवेदन में कहा गया है कि केन्या में कीमतें 18.6 प्रतिशत बड़ी हैं, थाइलैण्ड में 19.1 प्रतिशत, ईरान में 17 प्रतिशत, पाकिस्तान में 45.1 प्रतिशत, परंतु भारत में कीमतों में 90 प्रतिशत वृद्धि हुई है। कुछ मित्रों ने चीन तथा रूस का उल्लेख किया था। 1971 में चीन की अर्थव्यवस्था के बारे में संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक निर्धारण किया गया था। उसमें बताया गया है कि वहां पर सभी के पास रोजगार है और लोगों की आय बड़ाने का प्रयास किया जा रहा है, वहां जीवन निर्वाह लागत कम है और लोगों को आयकर नहीं देना पड़ता है। यह भी बताया गया है कि चीन की सरकार ने रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों की कीमतों को कम करने के लिए भी कदम उठाएं हैं। कृषि उत्पादों पर कर को 12 प्रतिशत से कम कर 1971 में छह प्रतिशत कर दिया गया है, दैनिक प्रयोग की औद्योगिक वस्तुओं की कीमतें भी वहां कम हो रही हैं...। यह चीनी अर्थव्यवस्था का चित्र है, इसकी तुलना भारतीय अर्थव्यवस्था से की जा सकती है। मेरा निवेदन यह है कि महंगाई के मूल कारणों को दूर किया जाना चाहिए। सरकार को खाद्यान्नों का व्यापार अपने हाथ में ले लेना चाहिए। अन्य अत्यावश्यक वस्तुओं के व्यापार को भी सरकार द्वारा अपने हाथों में लेना चाहिए । इनके वितरण की जिम्मेदारी सरकार को स्वयं संभालनी चाहिए

राशिफल

मेष राशि-धैर्यशीलता में कमी रहेगी, आत्म संयत रहें, शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकता है। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार विस्तार होगा, लाभ के अवसर मिलेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कार्यक्षेत्र में परिश्रम की अधिकता रहेगी। आय में व्यवधान आ सकते हैं,।

वृष राशि- कार्यों के प्रति उत्साह रहेगा, परंतु बातचीत में संतुलित रहें। मन अशांत रहेगा, धर्म-कर्म के प्रति रूझान बड़ेगा। पिता को स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं, माता का सहयोग मिलेगा। माता से धन प्राप्ती के योग हो सकते हैं, किसी मित्र का आगमन हो सकता है। बौद्धिक कार्यों से धनार्जन होगा, नौकरी में स्थान परिवर्तन की संभावना बन रही है।

मिथुन राशि-अपनी भावनाओं को वश में रखें, आत्मविश्वास में कमी आएगी। क्रोध के अतिरेक से बचें, पारिवारिक जिम्मेदारी बड़ सकती है। कुटुम्ब के किसी बुजुर्ग से धनलाभ हो सकता है, परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं। भाइयों का सहयोग मिलेगा। किसी रुके हुए धन की प्राप्ती हो सकती है,

कर्क राशि- आत्मविश्वास में कमी आएगी, शांत रहें। सुस्वाद खान-पान में रुचि बड़ेगी, स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। परिवार में धार्मिक कार्य होंगे, किसी मित्र के सहयोग से संपत्ति में निवेश कर सकते हैं। संचित धन में कमी आएगी, लेखनादि, बौद्धिक कार्यों से धनार्जन हो सकता है।सिंह राशि- (24 जुलाई-मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे। नौकरी में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। कार्यभार और आय में वृद्धि हो सकती है, परन्तु खर्च भी बड़ेंगे। सेहत का ध्यान रखें। वाणी के प्रभाव से कारोबार में लाभ के अवसर मिल सकते हैं। कुछ दिक्कतें भी आ सकती हैं। किसी राजनेता से मुलाकात हो सकती है। आत्मसंयत रहें।

कन्या राशि- कारोबार के विस्तार की योजना साकार होगी, भाइयों का सहयोग मिलेगा लेकिन परिश्रम की अधिकता रहेगी। घर-परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, अनियोजित खर्चे बड़ेंगे। वस्त्रादि उपहार भी मिल सकते हैं। नौकरी में परिवर्तन के साथ दूसरे स्थान पर भी जाना पड़ सकता है। आयात-निर्यात कारोबार में लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

तुला राशि- आत्म विश्वास से लबरेज रहेंगे, लेकिन आत्म संयत रहें। आलस्य की अधिकता रहेगी, घर-परिवार की सुख सुविधाओं का विस्तार होगा। जीवन साथी से मनमुटाव हो सकता है। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन संभव है, परिश्रम की अधिकता रहेगी। माता का सांनध्य व सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक राशि- वाणी में कठोरता के भाव रहेंगे, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों आदि के प्रति रूझान बड़ेगा। माता से विचारों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन धन प्राप्ती भी है। संचित धन में वृद्धि होगी, नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। संचित धन में वृद्धि होने के योग बन रहे हैं। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे, वाहन सुख में वृद्धि होगी। स्थान परिवर्तन संभव है।

धनु राशि- धैर्यशीलता में कमी आएगी, आत्म संयत रहें। वाणी का प्रभाव बड़ेगा, किसी धार्मिक सत्संगी कार्यक्रम में जाना हो सकता है। रहन-सहन में असहज रहेंगे, मीठे खान-पान की ओर रूझान बड़ेगा। संपत्ति से आय में बड़ोत्तरी हो सकती है, नौकरी में स्थान परिवर्तन संभव है। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, तरक्की के योग बन रहे हैं। आय में वृद्धि होगी लेकिन स्थान परिवर्तन की संभावनाएं बन रही हैं।

मकर राशि- आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे, अध्ययन में रूचि रहेगी। संपत्ति के रखरखाव पर खर्चे बड़ सकते हैं। जीवनसाथी का स्वास्थ्य विकार हो सकता है, चिकित्सा कार्यों में खर्च बड़ सकते हैं। नौकरी में परिवर्तन की संभावना बन रही है, किसी दूसरे स्थान पर जाना पड़ सकता है। भाइयों के सहयोग से परंतु परिश्रम की अधिकता रहेगी। संतान के स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं, रहन-सहन असुविधापूर्ण रहेगा।

कुंभ राशि- आत्मविश्वास में कमी रहेगी लेकिन परिवार का सहयोग मिलेगा। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर जाना हो सकता है। खान-पान के प्रति सचेत रहें, स्वास्थ्य में गड़बड़ी हो सकती है। किसी पुराने मित्र के सहयोग से रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। इच्छा विरुद्ध कार्यक्षेत्र में वृद्धि संभव है। बातचीत में संयत रहें, खर्चों में वृद्धि होगी। वस्त्रादि उपहार स्वरूप प्राप्त हो सकते हैं।

मीन राशि-मन में प्रसन्नता के भाव तो रहेंगे, फिर भी आत्म संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें, माता से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। नौकरी में किसी दूसरे स्थान पर जाना हो सकता है, आय में वृद्धि होगी। रहन-सहन कष्टकारी हो सकता है, अफसरों का सहयोग मिलेगा। परिवार का भी सहयोग मिलेगा, वस्त्रों आदि पर खर्चों में वृद्धि हो सकती है। माता को स्वास्थ्य विकार हो सकता है, रहन-सहन कष्टकायी हो सकता है।

दुनिया पर हावी होने का चीनी मनसूबा

दुनिया के अनेक हिस्सों में पिछले हफ्ते बहुत से दिलचस्प नजारे दिखाई दिए। भारत की राजनीति हो, दीपावली का उत्सव हो या दीपावली के दिन ब्रिटेन में एक हिंदू ऋषि सुनक का प्रधानमंत्री बनना हो, लेकिन इन सबके बीच जो एक चौंकाने वाला नजारा दिखाई दिया, वह चीन से था। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की पंचवर्षीय कांग्रेस या अधिवेशन में। यह अधिवेशन चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का नया नेतृत्व चुनता है। यही नेतृत्व चीन की सरकार होता है। पुरानी परंपराओं और नियमों को ताक पर रखकर इस बार शी जिनपिंग को तीसरी बार पार्टी का महासचिव या देश का सर्वोच्च नेता चुन लिया गया। माना जा रहा है कि अब जिनपिंग कम से कम दस साल के लिए और अगर वह चाहें, तो जिंदगी भर के लिए सत्ता पर काबिज रह सकते हैं। वैसे, देखने लायक नजारा यह नहीं था। नजारा था, पूर्व राष्ट्रपति हू जिन्ताओ के साथ हुआ व्यवहार, लेकिन चीन के भीतर यह खबर कहीं नहीं आई। चीन के प्रमुख अखबार ग्लोबल टाइम्स ने खबर यह छापी कि चीन में विदेशी निवेश बड़ाने के लिए सरकार ने बहुआयामी सुधारों के एलान किए हैं, लेकिन बाकी दुनिया इस वक्त चीन की राजनीति और अर्थनीति, दोनों को ही काफी शंका के साथ देख रही है। जिनपिंग 2012 में राष्ट्रपति बने थे और तभी से चीन की आर्थिक और सामरिक शक्ति को एक नई ऊंचाई पर ले जाने का सपना साकार करने में जुटे हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अधिवेशन में उन्होंने चीन के भविष्य का जो खाका खींचा है, उससे दुनिया भर में खलबली मची हुई है। उन्होंने दो तरह के लक्ष्य सामने रखे हैं। पहला, 2035 तक चीन को विकासशील देशों की कतार से निकालकर एक ऐसा देश बनाना, जिसमें आम जनता गरीब नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय हो, यानी उसकी आमदनी दुनिया के पैमाने पर अमीर देशों के मिडिल क्लास जैसी ही हो, साथ ही, चीन की सेना का आधुनिकीकरण भी 2035 तक करना है। लेकिन इससे बड़ा दूसरा लक्ष्य उन्होंने 2049 के लिए रखा है। यह चीन गणराज्य की शताब्दी का वर्ष होगा। साल 2049 तक जिनपिंग सुनिश्चित करना चाहते हैं कि चीन एक ऐसा राष्ट्र बन जाए, जो राष्ट्रीय शक्ति व अंतरराष्ट्रीय प्रभाव के मानकों पर दुनिया में सबसे आगे हो। यह बात सुनने में कुछ खास खतरनाक नहीं लगती। यह वैसी ही बात है, जैसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2047 तक भारत को विश्व गुरु बनाना चाहते हैं। पर चीन व जिनपिंग पर बारीक नजर रखने वाले जानकार उनकी इस इच्छा के भीतर काफी कुछ पड़ रहे हैं और उनके हिसाब से जिनपिंग की यह महत्वाकांक्षा काफी खतरनाक मोड़ ले सकती है। याद रखना चाहिए कि पिछले बीस सालों में चीन ने काफी तेजी से तरक्की की है और जिनपिंग के कुरसी संभालने के बाद के दस साल में चीन की अर्थव्यवस्था का आकार दो गुना हुआ है। साल 2012 में जब वह कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने, तब चीन की जीडीपी 8.53 ट्रिलियन या लाख करोड़ डॉलर थी। अब यह सतरह लाख करोड़ डॉलर के पार जा चुकी है। उसने जापान को काफी पीछे छोड़ दिया है और अमेरिका के नजदीक पहुंचता जा रहा है। काल पर मोहर लगने के साथ ही चीन के रियल एस्टेट कारोबार से लेकर शेयर बाजार तक बेचैनी की एक लहर दिखाई पड़ी है। इस बेचैनी और चीन के स्वर्णिम भविष्य के जिनपिंग के सपने के बीच तालमेल की गुंजाइश तलाशना आसान नहीं है। लेकिन इस बेचैनी की वजह समझना भी बहुत मुश्किल नहीं है। जिनपिंग को तीसरी बार चुन लिया जाएगा, इसमें किसी को भी शक नहीं रह गया था, लेकिन जिस अंदाज में उन्हें चुना गया है, देखकर चिंता गहराती है। जिनपिंग अपने लक्ष्यों को हासिल करने या चीन को दुनिया का सबसे ताकतवर देश बनाने के लिए क्या और कैसे पैंतरे आजमा सकते हैं। असर दिख रहा है कि चीन के अमीर देश छोड़कर भागने की कोशिश में जुट गए हैं। कितने कामयाब होंगे पता नहीं, मगर दुनिया के शीर्ष आर्थिक अखबार फाइनेंशियल टाइम्स ने खबर दी है कि इसकी सुगबुगाहट तो महीनों से चल रही थी। अब बड़े घरानों के निवेश का हिसाब-किताब रखने वाले फैमिली ऑफिस चलाने वाले वकीलों के पास ऐसे लोगों-अमीरों का तांता लगा हुआ है, जो न सिर्फ चीन, बल्कि हांगकांग से भी खिसकना चाहते हैं। अब तक चीन से दुखी या चिंतित धनकुबेर हांगकांग जाया करते थे, लेकिन वहां लोकतंत्र समर्थक आंदोलन को कुचले जाने के बाद वह जगह भी सुरक्षित नहीं मानी जा रही। कूटनीति और सामरिक विषयों के विशेषज्ञ चार्ल्स पार्टन का कहना है कि अगर पार्टी कांग्रेस में जिनपिंग के भाषण को सीधे शब्दों में बदलकर देखा जाए, तो वह अब चोटी पर पहुंचना चाहते हैं, अमेरिका को शिखर से धकेल देना चाहते हैं और फिर पूरी दुनिया की बिसात ऐसे बिछाना चाहते हैं, जहां सब कुछ चीन के हितों और मूल्यों के हिसाब से चलता हो। जिनपिंग ने एक और बात की है, जो खासकर निवेशकों को चुभ रही है। उन्होंने संकेत दिए हैं कि देश के आर्थिक विकास के मुकाबले सुरक्षा ज्यादा बड़ी प्राथमिकता होगी। यह बात विदेशी और देशी, दोनों ही निवेशकों को चिंता में डाल रही है। हालांकि, चीन की जीडीपी में 3.9 प्रतिशत बड़त की खबर आई है, लेकिन इससे किसी को राहत महसूस नहीं हो रही। उल्टे लोग सवाल पूछ रहे हैं कि अब भी कोरोना जनित लॉकडाउन लगा-लगाकर कैसे आर्थिक विकास पटरी पर लौटेगाड़ शुक्रवार को ही खबर आई कि वुहान में फिर लॉकडाउन लगा दिया गया है। पिछले कई सालों से दुनिया यह मानती थी कि चीन आर्थिक विकास की कीमत पर कोई फैसला नहीं करेगा, लेकिन अब शायद परिस्थिति बदल गई है। अब सुरक्षा, साम्राज्य विस्तार या अपना दबदबा बड़ाने के लिए चीन आर्थिक विकास से भी समझौता करने को तैयार हो रहा है। भारत के लिए यहां दोहरी चुनौती है, क्योंकि चीन के साथ भारत का व्यापार और व्यापार घाटा भी बड़कर चिंताजनक स्तर पर पहुंच चुका है। दूसरी तरफ, सीमा पर भी चीन लगातार परेशानी खड़ी करता रहा है। हम आर्थिक, सामरिक रूप से कितने तैयार हैंड़ दुनिया भर के निवेशक अगर चीन से मुंह मोड़ने लगते हैं, तो फिर उनके स्वागत के लिए हमारी सरकार और हमारे व्यापारी कितने तैयार हैंड़

सकल जगतारिणी हे छठी मइया

छठ लोकपर्व है। लोकगीत इसका प्राणरस है। सूर्य भी तो इस जगत में प्राण फूंकता है। उगी हे सुरूज देव, भेल भिनसरवा, अरघ केरा बेरवा हो/ बरती पुकारे देव, दुनो करजोरिया, अरघ केरा बेरिया हो... यह सुबह के अर्घ्य के समय का गीत है। इस गीत के जरिये व्रती महिलाएं सूर्य देव से आराधना करती हैं कि आप उगिए। सामूहिक स्वर में जब घाट पर यह गीत गाया जाता है, तो लगता है, कहीं सैकड़ों लोग एक साथ मंत्र का जाप कर रहे हों और सामने से सूर्य देव आ रहे हों। छठ में गाए जाने वाले लोकगीत ही उसके मंत्र और शास्त्र, दोनों हैं। छठ में जितने विधि-विधान होते हैं, उनमें थोड़ा-बहुत बदलाव अलग-अलग इलाके में बेशक आप देख सकते हैं, लेकिन एक बात हर जगह समान रूप से मिलेगी कि कहीं भी, कोई भी छठ का पर्व गीत के बिना करता हुआ नहीं मिलेगा।

मुझे छठ के पारंपरिक गीत बेहद पसंद हैं। खासकर वे गीत, जो व्रती महिलाएं अपने-अपने घाट पर व्रत के दौरान, प्रसाद बनाते वक्त, खरना के दिन सामूहिक स्वर में गाती हैं। इनमें सबके कल्याण की भावना होती है। सकल जगतारिणी हे छठी मइया, सभक शुभकारिणी हे छठी मइया/ जल-थल-वायु-अगिन में अहीं छी, अहीं छी जग के आधार/ सकल जगतारिणी हे छठी मइया, सभक शुभकारिणी हे छठी मइया...।

इधर चलन चला है कि पॉपुलर फिल्मी धुनों पर भी छठ गीत बनने लगे हैं, और यह भी कि जो कुछ सामयिक घट रहा है, उसको भी छठ के गीतों में लाया जाए। व्यक्तिगत तौर पर मैं इसकी पक्षधर नहीं हूं। सामयिक संदर्भों को लोकगीतों में लाने के लिए अनेक विधाएं हैं। फाग के गीत, चैती के गीत, सोरठी धुन पर गीत सब सामयिक विषयों को सामने लाते रहे हैं। सबसे बड़कर तो कजरी की विधा है, जो हमेशा समकालीन विषयों को लेकर आगे बड़ती रही है। इतनी विधाएं हैं, जिनमें कई प्रयोग किए जा सकते हैं।वैसे छठ के गीतों का दायरा सीमित है, इसलिए इसे सीमित ही रहने दिया जाए। सृष्टि और प्रकृति से जुड़े तत्वों का मेल-जोल, सूप-दौरा में रखे जाने वाले सामान का विवरण, नदी-घाट का विवरण, बेटा-बेटी की कामना, अच्छे स्वास्थ्य की कामना, दुख से मुक्ति की कामना, सुख मिलने पर धन्यवाद ज्ञापित करने जैसे शाश्वत तत्वों को लेकर ही गीत गाया जाए। छठ के पारंपरिक गीत में उगी हे सुरूज देव... कांच ही बांस के बहंगिया... गंगा माई के उंच अररिया... सोने के खड़उआं हे दीनानाथ... जैसे गीत मुझे बहुत पसंद हैं। छठ गीतों में कैसा प्रयोग हो, इसके लिए बिहार की मशहूर लोकगायिका विंध्यवासिनी देवी मानक हो सकती हैं। भूपेन हजारिका साहब जैसे संगीतकार के साथ मिलकर उन्होंने जो गाए, वे पारंपरिक छठ गीत की तरह लोकमानस में रच-बस गए हैं।मैं बचपन से ही छठ देखती रही हूं। इसमें बहुत कुछ बदला है, लगातार बदलने की कोशिश जारी भी रहती है। मगर अच्छी बात यह है कि इस पर्व पर बाजार हावी नहीं हो पा रहा। जैसे, छठ में आज भी आपको घर पर में बनाकर खाना होगा। अमीर हो या गरीब, सब नहाय-खाय के दिन लौकी की सब्जी और चावल ही खाते हैं। सब ठेकुआ ही प्रसाद में चढ़ाते या बांटते हैं। हालांकि, इधर एक-दो बदलाव ऐसे भी दिखे हैं, जो पीड़ा देते हैं। एक तो यह कि अब छठ घाटों पर भी अमीरी और गरीबी का फर्क दिखने लगा है, और दूसरा यह कि छठ गीतों को भी सामान्य फिल्मी गीत की तरह बनाने की कोशिश हो रही है। हाल के वर्षों में छठ गीतों में अश्लीलता का बड़ना बेहद दुखद है। मेरा मानना है कि छठ गीतों में शालीनता बचाना छठ महोत्सव समितियों के हाथों में है। वे तय कर लें कि जो मूल रूप से छठ के गीत होंगे या मूल गीत के करीब होंगे, या फिर जिन गीतों में छठ का मर्म-भाव व तत्व होगा, उन्हीं गीतों को छठ घाटों पर, गलियों में सार्वजनिक तौर पर बजाया जाएगा, तो निस्संदेह वैसे ही गीत बनने-बजने लगेंगे, जो सदियों से हमारे दिलों के करीब रहे हैं। स्पष्ट है, समाज को अपने तईं प्रयास करना होगा। कुछ गायक तर्क देते हैं कि अश्लील गीतों को 'मिलियन व्यूज' मिल जाते हैं, जबकि उम्दा गीत अपने श्रोताओं को तरसते रहते हैं। इसलिए श्रोताओं को तय करना होगा कि उनको क्या सुनना चाहिए। वे अपने बच्चों या परिवार को क्या सुनाना चाहते हैं। श्रोता यह रोना नहीं रो सकते कि यही गाना चल रहा है। छठ की पवित्रता को ध्यान में रखते हुए समाज को जागना चाहिए। मुझे भी अश्लील गीत गाने के ऑफर मिलते हैं। न कहने पर यह धमकी भी दी जाती है कि इस जीवन में गायक-कलाकार बनने का ख्वाब छोड़ दो। मगर अच्छी बात यह रही है कि जिन लोगों ने मुझे उस वक्त इस तरह की सलाह दी थी, वही अब मुझसे अच्छे गीतों की मांग करने लगे हैं। पूर्वांचल के सभी युवाओं को छठ पर्व से प्रेरणा लेते हुए अपनी संस्कृति के लिए दृढ़ता के साथ खड़ा होना चाहिए। 'पब्लिक डिमांड' के अनुसार गाने के बजाय मैंने पब्लिक की डिमांड बदलने के लिए गाने का प्रयास किया। इसका लाभ यह मिला कि चंद कार्यक्रम ही सही, पर वे यादगार रहे। मान-सम्मान और गरिमा-मर्यादा के साथ।हां, एक सुखद बदलाव यह हुआ है कि अब हर साल अधिक से अधिक पुरुष व्रतियों की संख्या बड़ रही है। हमारे समाज में जिउतिया से लेकर तीज जैसे अनेक पर्व हैं, जिनमें महिलाएं अकेले ही उपवास करती हैं, लेकिन छठ संभवत- इकलौता ऐसा पर्व है, जो पुरुषों में भी कोमल-कल्याण भाव जगा रहा है।छठ का त्योहार निश्चय ही पूरी आस्था के साथ मनाएं, लेकिन श्रोतागण जहां भी छठ गीतों में छेड़छाड़ देखें, तुरंत विरोध करें। मगर इसके साथ अच्छा यह भी होगा कि रचनाकार बेटियों पर केंद्रित अधिक से अधिक छठ गीत लिखें। ऐसा करने से छठ की मर्यादा भी बची रहेगी और उसके दायरे का भी अधिकाधिक विस्तार होगा। विंध्यवासिनी देवी तो गा भी चुकी हैं- पांच पुतर अन धन लछमी, लछमी मंगबई जरूर/ पियवा के काया मोरा कंचन, बर मंगबई जरूर...

अभद्र बोल पर वार

अभद्र भाषा या 'हेट स्पीच' के लिए समाजवादी पार्टी के नेता आजम खान को दोषी ठहराए जाने का भारतीय राजनीति में एक व्यापक सांकेतिक महत्व है। इसका एक पहलू राजनीतिक है, तो दूसरा सामाजिक है, जिस पर विस्तार से चर्चा होनी चाहिए। खैर, आजम खान को तीन साल की कैद के साथ ही, 2,000 रुपये जुर्माने की भी सजा सुनाई गई है। आजम खान ने मुख्यमंत्री व रामपुर के तत्कालीन जिलाधिकारी के खिलाफ हेट स्पीच या भड़काऊ बयान दिया था और अप्रैल 2019 में उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली पार्टी के एक वरिष्ठ नेता आजम खान इन दिनों उत्तर प्रदेश के रामपुर से विधायक हैं। सजा मिलने के बाद उनकी विधानसभा सदस्यता जा सकती है। अगर ऐसा हुआ, तो यह दूसरे नेताओं के लिए सबक होगा। दूसरी ओर, अगर लोग यह मानेंगे कि राजनीतिक द्वेष की वजह से आजम खान को सजा सुनाई गई है, तो इसका बुरा असर भी हो सकता है। फैसला भले अदालत ने किया है, लेकिन सरकार के लिए यह जरूरी है कि वह किसी भी तरह से राजनीतिक विद्वेष दर्शाती हुई न दिखे। आजम खान मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। जमीन हड़पने के एक मामले में वह महीनों जेल में रहे हैं और इस मामले में उन्हें तत्काल तो जेल नहीं जाना पड़ेगा, वह ऊपरी अदालत में अपील कर सकते हैं। वैसे भी ऐसे मामलों में किसी नेता को सजा देना आसान काम नहीं है। देश में बड़ी संख्या में ऐसे नेता हैं, जिन्होंने भड़काऊ बयान दिए हैं, पर आराम से सभाओं में या लोगों के बीच घूम रहे हैं। घृणा फैलाने वाले बयान व भाषण तो देश में बहुत हैं, लेकिन सजा मिलने के उदाहरण बहुत कम हैं। घृणा की अपनी अलग राजनीति है, सत्ता या सरकार बदलने के साथ ही अपराध के प्रति नजरिया बदल जाता है। विपक्ष में रहते बहुत तीखा बोलने वाले नेता भी सत्ता में आकर अपेक्षाकृत सुधर जाते हैं। कानून की राह भी बहुत उलझी हुई है, अनेक नेता पहले ही अदालतों से राहत या जमानत लेकर बैठे रहते हैं। दरअसल, बहुत हद तक ऐसे मामलों में सरकार की मर्जी भी मायने रखती है। आजम खान की ही बात करें, तो उनके खिलाफ कई मामले चल रहे हैं। कभी वह उत्तर प्रदेश की सत्ता में बड़े कद्दावर नेता थे। तमाम परेशानियों के बावजूद पिछले चुनाव में उन्होंने साबित किया कि आज भी उनका जमीनी आधार है। अब जरूरी है कि वह अगर खुद को निर्दोष मानते हैं, तो कानूनी लड़ाई पुरजोर तरीके से लड़ें। जहां तक कानून और संविधान की बात है, तो उससे कोई समझौता किसी भी सरकार को नहीं करना चाहिए। कानून में पर्याप्त प्रावधान हैं कि कोई भी भड़काऊ इंसान छुट्टा नहीं घूम सकता, लेकिन आज यह बात किसी से छिपी नहीं कि सभी दलों में ऐसे लोग भरे पड़े हैं, जिनके नफरती बोल देश के बुनियादी लोकतांत्रिक ढांचे को नुकसान पहुंचा रहे हैं। अपनी बात रखने का एक सलीका है, जिसे लोग भूलते जा रहे हैं। यह भी एक पहलू है कि समाज में अपशब्द ही लोगों का ज्यादा ध्यान खींचने लगे हैं। अपशब्द बोलने वालों को सजा मिलने लगेगी,

वास्तु के अनुसार, इस दिशा में सिर रखने से आती है अच्छी नींद

अपनी रोजमर्रा की जिंदगी से सुकून और आराम की तलाश में हम सभी अपने अपने घरों का रुख करते हैं। ऐसे में घर यदि वास्तु शास्त्र के अनुसार व्यवस्थित किया जाए तो घर में हमेशा पॉजिटिव एनर्जी बनी रहती है। इससे हमारा मन शांत रहता है और नए नए कार्य को करने के लिए प्रेरित होता है। वास्तु घर की सजावट में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इससे घर की सुंदरता और भी बढ़ जाती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर को सजाने से देवता प्रसन्न होते हैं और घर पर किसी तरह का कोई भी नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। आज हम कुछ आसान से वास्तु उपाय बताने जा रहे हैं

1. बेडरूम में मेन गेट की तरफ पैर करके नहीं सोना चाहिए। सोते वक्त कभी -भी पूर्व दिशा में सिर और पश्चिम दिशा में पैर करके सोने से मन आध्यात्मिक भावनाओं की वृद्धि होती है।
2. किसी भी व्यक्ति को दक्षिण दिशा की ओर पैर करके नहीं सोना चाहिए। इससे बेचैनी, घबराहट जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है।
3. घर के कमरों में कांटे वाली गुलदस्ते नहीं रखनी चाहिए।
4. घर के उत्तर दिशा में जिसे ईशान कोण भी कहते हैं हल्के वस्तुएं रखनी चाहिए।
5. घर में अग्नि से जुड़ा हुआ कोई भी उपकरण दक्षिण- पूर्व दिशा में रखना चाहिए।
6.घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक आइटम को का उचित रखरखाव करना चाहिए।
7. घर में यदि पौधे लगे हुए हैं तो उनमें रोजाना पानी देना चाहिए। ताकि पौधा सूखने न पाए।
8. दक्षिण पश्चिम दिशा में ओवरहेड वॉटर टैंक की व्यवस्था करने से काफी शुभ माना जाता है।

न्यूज ट्रैक....

खिलाड़ियों के खाने में आ रही समस्या को हल कर लेगा बीसीसीआई

कोलकाता । भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के पूर्व अध्यक्ष सौरव गांगुली ने कहा है कि सिडनी में भारतीय टीम को दिये भोजन को लेकर जो शिकायतें आयी हैं। उसे बीसीसीआई हल कर लेगा। गांगुली के अनुसार खिलाड़ियों के भोजन वापस लौटा दिये जाने के मामले को अधिक तूल देने की जरुरत नहीं है। बुधवार को भारतीय क्रिकेट टीम के कुछ सदस्यों द्वारा सिडनी में अभ्यास सत्र के बाद टी20 विश्व कप आयोजकों द्वारा परोसा गया भोजन करने से इनकार के मामले को ज्यादा तूल नहीं दिया। भारतीय खिलाड़ियों को अभ्यास सत्र के बाद ठंडे सैंडविच और फल परोसे गए थे जिन्हें खाने से खिलाड़ियों ने इंकार करते हुए होटल लौटकर भोजन किया। गांगुली ने कहा, ''मुझे भरोसा है कि बीसीसीआई इस मामले को हल कर लेगी। गांगुली ने राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेताओं रौनक घोषाल और अंचिता शेउली सेन सहित बंगाल के अन्य खिलाड़ियों को सम्मानित किये जाने के समय ये बात कही। उन्होंने कहा, ''यह पुरस्कार खिलाड़ियों की रात भर की मेहनत का ही परिणाम है। मुझे याद है कि जब मैं खुद था तब सीएसजेसी सालाना पुरस्कारों का इंतजार करता था।

पीसीबी अगले साल की शुरुआत में वेस्टइंडीज के साथ घरेलू टी20 सीरीज खेलेगा

कराची । पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने कहा है कि वह जनवरी 2023 की जगह एक साल बाद 2024 में वेस्टइंडीज के साथ घरेलू टी20 सीरीज खेलेगा। पीसीबी ने कहा कि व्यस्त कार्यक्रम को देखते हुए उसने ये बदलाव किये हैं। पीसीबी ने कहा कि उसने ये बदलाव व्यस्त कार्यक्रम को को देखते हुए क्रिकेट वेस्टइंडीज से बात करने के बाद ही किये हैं। बोर्ड तीन मैचों की टी-20 श्रृंखला को स्थगित करने पर सहमत हैं। पहले टी20 सीरीज का आयोजन जनवरी 2023 में होना था पर अब इसे 2024 के शुरुआती तीन महीनों में आयोजित किया जाएगा। पीसीबी के एक प्रवक्ता ने कहा, ''यह फैसला इसलिए भी किया गया क्योंकि 2024 में आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप का आयोजन होना है, जिसकी मेजबानी जून में वेस्टइंडीज और अमेरिका मिलकर कर रहे हैं। वहीं इससे पहले छोटे प्रारुप की श्रृंखला खेलने से दोनों ही टीमों को टूर्नामेंट की तैयारी में सहायता मिलेगी।

अर्शदीप टीम में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं : कुंबले

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के दिग्गज स्पिनर और पूर्व कप्तान अनिल कुंबले ने कहा है कि बाएं हाथ के युवा तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह में काफी संभावनाएं हैं और वह टीम के लिए बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। अर्शदीप ने टी20 विश्वकप में पाकिस्तान के बाबर आजम और मोहम्मद रिजवान के विकेट लेकर पाक टीम की बल्लेबाजी को ध्वस्त कर दिया था। अर्शदीप ने इस साल के शुरू में भारत की तरफ से शानदार करने के बाद से ही लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। कुंबले ने कहा कि उन्होंने आईपीएल टीम पंजाब किंग्स का कोच रहते हुए अर्शदीप के प्रदर्शन को करीब से देखा है। उनका कहना है कि अर्शदीप आने वाले समय में जहीर खान जैसे मुख्य गेंदबाज बन जायेंगे। कुंबले ने एक कार्यक्रम में कहा, ''अर्शदीप निश्चित तौर पर परिपक्व हो गया है और मैं चाहता हूं कि वह अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखे। उसमें वही सब कुछ करने की क्षमता है जो जहीर ने भारत के लिए किया था।'' उन्होंने कहा, ''मैं चाहता हूं कि अर्शदीप भारत के लिए अच्छा प्रदर्शन करें।

लक्ष्य सेन, एच एस प्रणय डेनमार्क ओपन के प्री क्वार्टरफाइनल में पहुंचे

ओडेन्से। विश्व चैम्पियनशिप के कांस्य पदक विजेता लक्ष्य सेन और एच एस प्रणय ने बुधवार को सीधे गेम में जीत दर्ज कर डेनमार्क ओपन के पुरूष एकल के प्री क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया जबकि अनुभवी सायना नेहवाल महिला एकल के पहले दौर में हारकर बाहर हो गयीं। गैर वरीयता प्राप्त भारतीय खिलाड़ी सेन ने 39 मिनट तक चले पहले दौर के मैच में इंडोनेशिया के छठे वरीय एंथोनी सिनिसुका जिनटिंग को 21-16 21-12 से पराजित किया जिससे अब सुपर 750 टूर्नामेंट के प्री क्वार्टरफाइनल में उनका सामना हमवतन एच एस प्रणय से होगा।

सेन की यह इस साल जिनटिंग पर यह तीसरी जीत थी, इससे पहले उन्होंने मार्च में जर्मन ओपन में और मई में थॉमस कप में उन्हें हराया था। प्रणय को चीन के झाओ जुन पेंग पर 21-13 22-20 से जीत करने में 43 मिनट का समय लगा। वह इस साल के शुरू में दो

बार - जून में इंडोनेशिया ओपन और अगस्त में विश्व चैम्पियनशिप - इसी प्रतिद्वंद्वी से हार गए थे। महिला एकल में 2012 ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता सायना को पहले दौर में हार का सामना करना पड़ा। वह चीन की झांग यि मान से 48 मिनट तक चले मुकाबले में 17-21 21-19 11-21 से हार गयीं। सायना को चीन की इस खिलाड़ी से साल में दूसरी बार हार मिली है, वह फरवरी में मकाऊ ओपन में भी उससे हार गयी थीं। साइना के बाहर होने से टूर्नामेंट में महिला एकल में भारतीय अभियान भी समाप्त हो गया। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की पुरूष युगल जोड़ी ने कोरिया के कांग मिन ह्युक और सियो सेयुंग जाए पर जीत दर्ज की। भारत की सातवीं वरीय जोड़ी ने कोरियाई जोड़ी को 44 मिनट तक पहले दौर के मैच में 21-15 21-19 से मात दी जिससे अब प्री क्वार्टरफाइनल में उनका सामना इंडोनेशिया के मोहम्मद शोहिबुल फिकरी और मौलाना बगास से होगा।

स्मार्ट तरीके अपनाने से मिली टीम इंडिया में जगह : सूर्यकुमार

मुम्बई । भारतीय टीम में आने के बाद तेजी से किसी भी क्रम पर प्रभावशाली बल्लेबाजी कर अपना प्रभाव दिखाने वाले आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव को ऐसे ही टीम में स्थान नहीं मिला। सूर्या ने इसके लिए अपने खेल में कई बदलाव भी किये। चयनकर्ताओं को प्रभावित करने के लिए सूर्या ने स्मार्ट तरीके अपनाये। इसके तहत उन्होंने अपने अभ्यास के तरीके में बदलाव किया, फिटनेस के लिए अपने खाने पर ध्यान दिया और ऑफ साइड पर अधिक बल्लेबाजी की। सूर्यकुमार ने कहा, मेरी पत्नी देविशा और मैंने साल 2017-18 में इस पर काफी सोचा और कुछ स्मार्ट तरीके अपनाने का का फैसला किया। आप कड़ी मेहनत करते हो, जिसके बल पर आप आगे बढ़ते हो पर हमने कुछ अलग करने का भी फैसला किया। उन्होंने कहा, मैंने अलग तरह से अभ्यास करना शुरू किया। मुझे 2018 के बाद एहसास हुआ कि मुझे अपने खेल पर काम करने की जरूरत है। मैंने ऑफ साइड की तरफ

अधिक शॉट खेलने शुरू किए। सूर्यकुमार ने कहा, मैंने भोजन पर ध्यान दिया और कम भोजन करना शुरू कर दिया। मैंने कुछ ऐसी चीजें की जिनसे मुझे वास्तव में 2018 और 2019 के घरेलू सत्र में सहायता मिली। इसके बाद 2020 में मेरा शरीर पूरी तरह से बदल गया था। सूर्यकुमार को अपने प्रथम श्रेणी क्रिकेट करियर को शुरू करने के काफी समय बाद तकरीबन 11 साल बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण का अवसर मिला है। सूर्यकुमार ने कहा कि वह पहले बिना सोचे समझे अभ्यास कर रहे थे और निराश हो रहे थे। इसलिए उन्होंने अपने अभ्यास के तरीकों में बदलाव किया। सूर्यकुमार ने कहा, इसमें समय लगा। हमें यह जानने में डेढ़ साल लग गए कि मुझे किन चीजों से मदद मिलेगी और मैं कैसे आगे बढ़ सकता हूं। इसके बाद हम दोनों को एहसास हुआ कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और फिर सब कुछ ठीक होने लगा।

दक्षिण अफ्रीका के रोसौव ने टी20 विश्वकप में शतक लगाने के साथ ही बनाया अहम रिकार्ड

सिडनी । दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज रिले रोसौव ने टी20 विश्व कप क्रिकेट में बांग्लादेश के खिलाफ शतक लगाने के साथ ही एक अहम रिकार्ड अपने नाम किया है। रोसौव टी20 विश्व कप में शतक लगाने वाले पहले दक्षिण अफ्रीका और पूर्ण सदस्य देश के पहले खिलाड़ी हैं। रोसौव ने इससे पहले भारत दौरे में एक शतक लगाया था। वहीं रोसौव से पहले फ्रांस के बल्लेबाज गुस्ताव मैकऔन ने टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में लगातार दो शतक लगाये थे पर फ्रांस की टीम अभी पूर्ण सदस्य देशों में शामिल नहीं है। रोसौव ने 56 गेंदों में 109 रनों की तेज तर्रार पारी खेली और उनकी इस पारी की बदौलत ही दक्षिण अफ्रीकी टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ पांच विकेट पर 205 रन बनाये। रोसौव ने 52 गेंदों में ही अपना शतक पूरा कर लिया। इस प्रकार वह टी20 विश्व कप में सबसे तेजी से शतक लगाने वाले चौथे खिलाड़ी बने हैं। अभी तब वेस्टइंडीज के विस्फोटक बल्लेबाज क्रिस गेल के नाम टी20 विश्व कप में सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड है।

नीदरलैंड में लीवरपूल के मोहम्मद सलाह एजेक्स एमस्टर्डम के खिलाफ मैच में गेंद पर नियंत्रण का प्रयास करते हुए।

व्यापार न्यूज

डॉलर के मुकाबले रुपया 67 पैसे चढ़ा

मुंबई । डॉलर सूचकांक के अपने ऊंचे स्तर से पीछे हटने के बीच अमेरिकी मुद्रा की तुलना में रुपया गुरुवार को शुरुआती कारोबार में 67 पैसे चढ़कर 82.14 पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 82.15 पर खुला और फिर मजबूती के साथ 82.14 के स्तर पर आ गया, जो पिछले बंद भाव के मुकाबले 67 पैसे अधिक है। रुपया पिछले कारोबारी सत्र में शुक्रवार को डॉलर के मुकाबले सात पैसे टूटकर 82.81 पर बंद हुआ था। दीपावली बालीप्रतिपदा के अवसर पर बुधवार को विदेशी मुद्रा बाजार बंद था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.06 प्रतिशत चढ़कर 109.76 पर आ गया।

क्रॉम्पटन ग्रीव्स का मुनाफा 17.7 प्रतिशत घटा

नई दिल्ली । क्रॉम्पटन ग्रीव्स कन्ज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (सीजीसीईएल) का 30 सितंबर को समाप्त चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही का मुनाफा 17.69 प्रतिशत घटकर 130.71 करोड़ रुपए रह गया। सीजीसीईएल ने शेयर बाजार को बताया कि मांग में कमी के कारण उसके मुनाफे में कमी आई है। इससे पिछले वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में कंपनी ने 158.81 करोड़ रुपए का मुनाफा कमाया था। हालांकि कंपनी की परिचालन आय चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में 22.7 प्रतिशत बढ़कर 1,699.50 करोड़ रुपए हो गई। एक साल पहले की समान तिमाही में यह 1,385.12 करोड़ रुपए थी। इसके अलावा कंपनी का कुल खर्च भी आलोच्य तिमाही में 31.57 प्रतिशत बढ़कर 1,564.54 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। एक साल पहले की समान तिमाही में यह 1,189.09 करोड़ रुपए था।

सेंचुरी टेक्सटाइल्स का मुनाफा 59 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली । आदित्य बिड़ला समूह की इकाई सेंचुरी टेक्सटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज का चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही का मुनाफा 59.38 प्रतिशत बढ़कर 69.97 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी ने एक नियामकीय सूचना में यह जानकारी दी। एक साल पहले की इसी अवधि में कंपनी ने 43.9 करोड़ रुपए का लाभ कमाया था। कंपनी की परिचालन आय पिछले वर्ष की समान अवधि के 1,034.27 करोड़ रुपए से बढ़कर 1,242.11 करोड़ रुपए हो गई। कंपनी का कुल खर्च भी बढ़कर 1,125.25 करोड़ रुपए हो गया, जो पहले 972.08 करोड़ रुपए था।

मजबूती के साथ खुले शेयर बाजार

सेंसेक्स 416 अंक चढ़ा, निफ्टी 17,783.90 पर

मुंबई । वैश्विक बाजारों में मिलेजुले रुख और बैंकिंग शेयरों में लिवाली से गुरुवार को शुरुआती कारोबार में बीएसई सेंसेक्स में उछाल दर्ज किया गया। इस दौरान तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 415.98 अंक चढ़कर 59,959.94 पर पहुंच गया। इसी तरह, व्यापक एनएसई निफ्टी भी 127.55 अंक बढ़कर 17,783.90 पर था। सेंसेक्स के शेयर में टाइटन, टाटा स्टील, कोटक महिंद्रा बैंक, सन फार्मा, एचडीएफसी, डॉ रेड्डीज, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, एक्सिस बैंक और इंडसइंड बैंक प्रमुख रूप से लाभ में है। दूसरी तरफ मारुति, एनटीपीसी, एचसीएल टेक्नोलॉजीज,

इंफोसिस और बजाज फाइनेंस के शेयर में गिरावट हुई। एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और हांगकांग का हैंगसेंग बढ़त में रहे जबकि जापान का निक्की और चीन का शंघाई कंपोजिट गिरावट में थे। वहीं बुधवार को दिवाली बालीप्रतिपदा के अवसर पर शेयर बाजार बंद रहे।

एशियाई बाजारों में तेजी

एशिया के प्रमुख शेयर बाजारों में गुरुवार को बढ़त का रुख देखने को मिला। इसकी वजह निवेशक इस बात की उम्मीद कर रहे हैं कि प्रमुख केंद्रीय बैंक आने वाले समय में ब्याज दरों में वृद्धि की रफ्तार कम कर सकते हैं। वहीं यूएस ट्रेजरी यील्ड के नीचे आने से भी बाजारों को मजबूती मिली है। वहीं सिंगापुर एक्सचेंज पर निफ्टी फ्यूचर्स में 94.5 अंक के उछाल के साथ 17,933 अंक के स्तर पर कारोबार हो रहा था। इससे संकेत मिलने लगे थे कि गुरुवार को दलाल स्ट्रीट पर तेजी का रुख रहने वाला है।

वायदा बाजार में सोने की कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली । दिवाली के बाद भी भारतीय वायदा बाजार में सोने की कीमतों में गिरावट देखी जा रही है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय बाजार में गुरुवार, 27 अक्टूबर को सोने और चांदी के भावों में उछाल देखा जा रहा है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का भाव शुरुआती कारोबार में 0.03 फीसदी गिर गया है। वहीं चांदी एमसीएक्स पर 0.01 फीसदी लुक गई है। गुरुवार को वायदा बाजार में 24 कैरेट शुद्धता वाले सोने का भाव सुबह 17 रुपए गिरकर 50,670 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया है। सोना गुरुवार सुबह 50,715 रुपए पर खुला। एक बार यह 50,660 रुपए तक चला गया। बाद में यह थोड़ा संभला और भाव 50,715 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर चांदी भी 7 रुपए गिरकर 58,159 रुपए हो गई है। चांदी का भाव 58,033 रुपए पर खुला था। एक बार भाव 58,162 रुपए तक चला गया। परंतु थोड़ी देर बाद ही इसमें गिरावट आ गई और यह 58,033 रुपए पर कारोबार करने लगी। अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी के भाव में उछाल आया है। सोने का हाजिर भाव 0.72 फीसदी बढ़कर 1,651.13 डॉलर प्रति औंस हो गया है।

भारत, चीन का व्यापार जनवरी-सितंबर में 100 अरब डॉलर के पार

बीजिंग । चीन के सीमा शुल्क विभाग द्वारा जारी व्यापार आंकड़ों के अनुसार भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार में लगातार बढ़ोतरी देखी जा रही है। यह आंकड़ा 2022 के पहले नौ महीनों में 100 अरब अमेरिकी डॉलर को पार कर गया है। इस दौरान भारत का व्यापार घाटा 75 अरब डॉलर से अधिक था। समीक्षाधीन अवधि में कुल द्विपक्षीय व्यापार 103.63

अरब डॉलर तक चला गया, जो पिछले साल इसी अवधि के मुकाबले 14.6 प्रतिशत अधिक है। चीन के सीमा शुल्क के सामान्य प्रशासन (जीएसी) द्वारा जारी आंकड़ों में कहा गया कि भारत को चीन का निर्यात 31 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 89.66 अरब डॉलर पर पहुंच गया। दूसरी ओर इन नौ महीनों में भारत का निर्यात 36.4 प्रतिशत की गिरावट के साथ 13.97 अरब डॉलर रहा। इसके चलते कुल व्यापार घाटा 75.69 अरब डॉलर से अधिक हो गया। पिछले साल भारत-चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार रिकॉर्ड 125 अरब डॉलर के स्तर को पार कर गया था। पिछले साल भारत को चीन का निर्यात 46.2 प्रतिशत बढ़कर 97.52 अरब डॉलर हो गया था। इस दौरान चीन को भारत का निर्यात 34.2 प्रतिशत बढ़कर 28.14 अरब डॉलर रहा था। भारत का व्यापार घाटा 2021 में 69.38 अरब डॉलर था।

अमेरिकी अर्थव्यवस्था बीती तिमाही में सकरात्मक रहने की संभावना

वाशिंगटन । अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए मुश्किलें अभी कम नहीं हुई हैं और महंगाई अभी भी 40 साल के उच्चतम स्तर के करीब है। साथ ही बढ़ती ब्याज दरों ने आवास बाजार को भी प्रभावित किया है और बढ़ती हुई दरें व्यापक नुकसान भी पहुंचा सकती है। वर्ष 2022 की पहली दो तिमाहियों में सिकुड़ने के बाद अमेरिका की अर्थव्यवस्था के बीती तिमाही में सकरात्मक रहने की संभावना है। डेटा जुटाने वाली एक कंपनी के सर्वेक्षण में अर्थशास्त्रियों ने अनुमान लगाया है कि मौजूदा वर्ष की तीसरी तिमाही में अमेरिका का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) दो प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा है। वहीं जनवरी-मार्च की अवधि में अर्थव्यवस्था में 1.6 प्रतिशत और अप्रैल से जून के बीच 0.6 प्रतिशत की वार्षिक गिरावट आई थी। आर्थिक वृद्धि में लगातार दो तिमाहियों में गिरावट मंदी का एक अनौपचारिक संकेत होता है लेकिन ज्यादातर अर्थशास्त्रियों का मानना है कि अर्थव्यवस्था अब तक मंदी से बची हुई है। हालांकि, अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व मुद्रास्फीति से निपटने के लिए ब्याज दरों में लगातार वृद्धि के बीच कई अर्थशास्त्रियों ने चिंता व्यक्त की है कि अगले साल मंदी की आ सकती है।

दुनिया में नंबर अकाउंट के लिए फेमस है स्विस बैंक!

नई दिल्ली । दुनिया के रईस स्विस बैंक में अपना अकाउंट जरूर खोलते हैं। ये बैंक अपने नंबर अकाउंट की वजह से फेमस है। असल में यहां खाता खोलने वालों को नाम की जगह नंबर दे दिया जाता है। इससे उनकी पहचान गोपनीय रहती है लेकिन कई और वजह भी हैं जिससे लोग इस बैंक में अपना अकाउंट खोलते हैं। गौरतलब है कि स्विस बैंकों में गोपनीयता बरकरार रखने का इतिहास काफी पुराना है। 17वीं सदी से ही इसकी शुरुआत हो चुकी थी, जब ग्रांड कौंसिल ऑफ जिनेवा ने एक कोड तैयार किया, जिसके तहत अकाउंट होल्डर की जानकारी किसी से भी साझा न करने का नियम बनाया गया। बहुत से लोगों को लगता है कि स्विस बैंक सिर्फ कालाधन

जमा करने का जरिया हैं, हालांकि ऐसा नहीं है। स्विस बैंकों में खाताधारक की पहचान गुप्त रखने के पीछे ये मंशा रही कि राजनैतिक अस्थिरता के हालात वाले देशों में लोगों का पैसा सुरक्षित रहे। जैसे कि सूडान, नॉर्थ कोरिया या इराक जैसे देशों में हालात लंबे अरसे से खराब हैं। ऐसे में पैसे लूटे जाने से बचाने के लिए स्विस बैंक अच्छा जरिया साबित होते रहे हैं। हालांकि इसका इस्तेमाल गलत इरादों से भी किया जाता रहा है।

स्विटजरलैंड में स्थित किसी भी बैंक में खाता खोलने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए बैंक आपके पहचान संबंधी दस्तावेजों को कॉरेस्पोंडेंस के जरिए मंगाता है। इसे आप ई-मेल के जरिए भी भेज सकते हैं। केवल बिना नाम वाला खाता खोलने के लिए ही आपको स्विटजरलैंड जाना जरूरी होता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक खाता खोलने के लिए मिनिमम बैलेंस 1 लाख डॉलर या 75 लाख रुपए के आसपास होता है। अकाउंट पर 300 डॉलर या तकरीबन 22 हजार रुपए का मेंटेनेंस चार्ज भी लगता है।

पटना में 108 के पार पहुंचा पेट्रोल, यूपी में सस्ता

नई दिल्ली । वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में पिछले 24 घंटे के दौरान 3 डॉलर प्रति बैरल का बड़ा उछाल दिखा है। इस बीच गुरुवार सुबह सरकारी तेल कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल के खुदरा रेट भी जारी कर दिए हैं लेकिन दिल्ली-मुंबई जैसे देश के चारों महानगरों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। हालांकि, कई शहरों में पेट्रोल और डीजल के खुदरा कीमतों में बड़ी बढ़ोतरी दिख रही है तो कुछ में राहत है। यूपी के गौतम बुद्ध नगर जिले (नोएडा-ग्रेटर नोएडा) में पेट्रोल 6 पैसे सस्ता होकर 96.58 रुपए और डीजल 7 पैसे टूटकर 89.75 रुपए प्रति लीटर हो गया है। दूसरी ओर, बिहार की राजधानी पटना में पेट्रोल के भाव 108 रुपए से भी ऊपर चले गए हैं। यहां पेट्रोल की कीमत88 पैसे बढ़कर 108.12 रुपए प्रति लीटर हो गई है। डीजल भी 82 रुपए बढ़त के साथ 94.86 रुपए प्रति लीटर पहुंच

गया है। कच्चे तेल में पिछले 24 घंटे में बड़ा उछाल दिखा है। ब्रेंट क्रूड का भाव 95.83 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई भी 3 डॉलर से ऊपर जाकर 88.09 डॉलर प्रति बैरल पर बिक रहा है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपए और डीजल 89.62 रुपए प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपए और डीजल 94.24 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपए और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 96.58 रुपए और डीजल 89.75 रुपए प्रति लीटर हो गया है। दूसरी ओर, बिहार की राजधानी पटना में पेट्रोल के भाव 108 रुपए से भी ऊपर चले गए हैं। यहां पेट्रोल की कीमत88 पैसे बढ़कर 108.12 रुपए प्रति लीटर हो गई है। डीजल भी 82 रुपए बढ़त के साथ 94.86 रुपए प्रति लीटर पहुंच गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.57 रुपए और डीजल 89.76 रुपए प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 108.12 रुपए और डीजल 94.86 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

कैलारस पुलिस ने किया नगर में भ्रमण

एसडीओपी,थाना प्रभारी सहित स्टाफ रहा और मौजूद

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस- श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय आशुतोष बागरी एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक

रायसिंह नरवरिया द्वारा जिले में अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं इसी तारतम्य में कार्यवाही करते हुए आज एसडीओपी संजय कोच्छा थाना प्रभारी वेदेंद्र कुशवाह ने पुलिस स्टाफ के साथ कैलारस शहर के पहाड़ गढ़ रोड, पुरानी सब्जी मंडी, टॉकीज गली,अशोक गली, बस स्टैंड, ट्रांसपोर्ट,नगर प्रमुख मार्गों भ्रमण किया एवं लोगों से मुलाकात की वही एसडीओपी संजय कोच्छा एव थाना प्रभारी वेदेन्द्र कुशवाह ने बताया की श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा थाना क्षेत्र अंतर्गत अवैध जुआ,सट्टा,शराब,चोरी,एवं अन्य मादक पदार्थ को बेचने एव परिवहन करने एव पुराने अपराधों में फरार वारंटीओं को पकडे एव अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए निर्देश दिए जिससे की अपराधों को पर अंकुश लग सके इसी को लेकर कैलारस पुलिस स्टाफ द्वारा थाना क्षेत्र में भ्रमण किया गया और लोगों से पूछताछ की गई बेवजह घूम रहे लोगों को समझाएं देकर घर भेजा गया एवं दुकानदारों एव अन्य नागरिकों से मुलाकात की गई वहीं दुकानदारों को सीसीटीवी कैमरे लगाने की बात कही जिससे कि अपराध करने पर अपराधी की पहचान हो सके वहीं उन्होंने मौजूद लोगों को अपना मोबाइल नंबर दिया और कहा कि आप लोगों को अगर कोई भी समस्या हो तो हमें फोन हम आपकी हर समस्या का समाधान करने की कोशिश करेंगे वही अपराधी कोई भी हो अगर अपराध किया है तो कार्यवाही की जाएगी हम उपस्थित लोगों से यही अपेक्षा रखते हैं एवं हमारा उद्देश्य कैलारस शहर में अपराधों अंकुश लगाना है है जिसमें आप लोगों का सहयोग आवश्यक है

एसडीओपी संजय कोच्छा, थाना प्रभारी वेदेन्द्र कुशवाह,उपनिरीक्षक वीर सिंह,राम मंत्र गुप्ता, प्रीति जादौन, सहायक उपनिरीक्षक, देव सिंह,अमर सिंह राजावत,प्रधान आरक्षक श्यामवीर सिंह, पंचम सिंह, आरक्षक दीपेंद्र, शिवकुमार, महेन्द, देवेंद्र सहित अन्य स्टाप मौजूद रहा

शक्ति केंद्र और बूथों को मजबूत करना हम सबकी जिम्मेदारी देवेंद्र सिंह नरवरिया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारतीय जनता पार्टी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूम में बनाने एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात तथा आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने के लिए भिंड जिले के सभी ग्रामीण शहरी अंचल के शक्ति केंद्र की बैठकें आयोजित की गई वही पार्टी के कार्यकर्ताओं ने बूथ स्तर तक पहुंचकर बैठकों में आगामी संगठनात्मक कार्यक्रम को लेकर कार्य योजना बनाने के लिए कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। जिले की 250 पार्टी कार्यकर्ताओं बैठक लेने के लिए भेजा गया। भाजपा जिला अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नरवरिया वन खंडेश्वर मंडल के उमंग वाटिका में शक्ति केंद्र की बैठकों में शामिल हुए जहां उन्होंने कहा कि हम सब कार्यकर्ता संगठनात्मक कार्यक्रमों को प्रभावी बनाते हुए शक्ति केंद्र के प्रत्येक बूथ केंद्र पर गति प्रदान करें और केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं को अंतिम छोर तक के व्यक्ति तक पहुंचा कर अपनी अहम जिम्मेदारी के साथ कार्य करें जब शक्ति केंद्र हमारा मजबूत होगा तब हम मिशन 2023 के विधानसभा चुनाव में अपने अब केंद्र को जिताने में अहम भूमिका के साथ कार्य करेंगे ।भारतीय जनता पार्टी की काम काजी बैठक उमंग वाटिका में सम्पन्न हुई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नरवरिया, कार्यक्रम की अध्यक्षता

मंडल अध्यक्ष अमित जैन ने की। बैठक की शुरुआत भारत माता, पितृ पुरुष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि अर्पित करके हुई। स्वागतमंडल प्रभारी पिंकी शर्मा कहा पार्टी की गतिविधियों को शक्ति केन्द्रों तक पहुँचाना है। शक्ति केंद्र और बूथों को मजबूत करना है। वस्तुस्थिति से अवगत करायें। समस्त शक्ति केंद्रों की आगामी रूप रेखा तय करें तथा शक्ति केंद्रों का सुदृढ़ीकरण करना जारी रखें। आगामी 25 दिसंबर को भारत रत्न स्व. पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की जयंती को सुशासन दिवस के रूप मे मनाना है। बूथ स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करने हैं। कार्यक्रमों की रुपरेखा तय कर उनको सम्पन्न करना है। कार्यक्रम रेड क्रॉस सोसाइटी अध्यक्ष नहीं दिख रहा है सुमित अग्रवाल,जिला सह कार्यालय मंत्री रोहित शाक्य, जिला सह सोशल मीडिया प्रभारी शेखर खटीक , मंडल महामंत्री संतोष राजावत , मंडल उपाध्यक्ष बच्चा सिंह , मनोज जैन, मंडल मंत्री,प्रशांत सोनी, सूरज बरुआ, रवि बाजपेई, लाल्ला पाठक , मिथलेश तोमर, पार्षद यश जैन, पार्षद किसन सोनी एवं शक्ति केंद्र प्रभारी, शक्ति केंद्र सहजोक बूथ अध्यक्ष भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।भारतीय जनता पार्टी मंडल लहार शक्ति केंद्रों पर 25 दिसंबर को भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपे की जयंती एवं विश्व के नेता भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात को सभी बूथों पर सुनेंगे एवं अटल बिहारी वाजपेई जी की जयंती सुशासन दिवस के रूप में बनाएंगे इसकी तैयारी के लिए शक्ति केंद्रों पर अहम बैठक का आयोजन किया गया जिसमें जबर सिंह कुशवाह मंडल अध्यक्ष,अतीश कुमार गुप्ता मंडल कोषाध्यक्ष,रामप्रसाद वघेल मंडल मंत्री,अखिलेश सिंह कुशवाह मंडल मंत्री, नीलम शर्मा मंडल अध्यक्ष महिला मोर्चा, राममूर्ति विश्वकर्मा मंडल उपाध्यक्ष महिला मोर्चा, नरेन्द्र सिंह कुशवाह शक्ति केंद्र संयोजक, तरुण देव कनेरिया सोशल मीडिया प्रभारी, मानबाबू शर्मा जनपद सदस्य एवं शक्ति केंद्र संयोजक, सुरेंद्र राठौर वरिष्ठ नेता भाजपा शक्ति केंद्र संयोजक,मंगल सिंह कुशवाह पूर्व जनपद सदस्य एवं शक्ति केंद्र संयोजक ,कल्याण सिंह चौहान शक्ति केंद्र प्रभारी,जनवेद सिंह प्रजापति वूथ अध्यक्ष,कमलसिंह कुशवाह शक्ति केंद्र प्रभारी,कटोरी देवी कुशवाहा,धनवंती देवी, द्रोपती आदि सम्मिलित हुए ।

अंबेडकर नगर से रामदयाल गौतम की रिपोर्ट अंबेडकरनगर के विधानसभा 280 जलालपुर के थाना क्षेत्र मालीपुर के मालीपुर ग्राम पंचायत के ग्राम सचिवालय मालीपुर विकासखंड जलालपुर में

आयुष्मान आधार,निशुल्क चिकित्सा शिविर

शिविर लगाकर सभी महिला एवं पुरुष बच्चे एवं बच्चियों का जिला अस्पताल के डॉक्टरों द्वारा बहुत ही अच्छा इलाज कराया गया जिस में मौजूद रहे लोगों में मालीपुर ग्राम पंचायत की ग्राम प्रधान श्रीमती माया यादव जी प्रधान पति श्री चंद्रशेखर यादव जी रामहित जय राम सुषमा पाल सविता विद्या कुंतला आदि तमाम लोग मौजूद रहे

मजदूर हेल्पलाइन- मजदूरों को सहायता प्रदान करने के लिए जन साहस और सहयोगी संस्थाओं द्वारा मजदूर सशक्तिकरण कार्यक्रम के अंतर्गत यह हेल्पलाइन सेवा उपलब्ध कराई गई है विवाद या आपदा के समय सहायता अथवा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए मजदूर और उनके परिवार इस नंबर पर निशुल्क जानकारी प्राप्त कर सकते हैं 1800200021

महावीर इंटरनेशनल के द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर एवं आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में कम्बल का होगा वितरण - विशाल राउत खोंगल

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

लांजी – महावीर इंटरनेशनल लांजी के द्वारा साल 2022 के अंत में तथा नव वर्ष का स्वागत महावीर इंटरनेशनल लांजी के द्वारा आंखों की बिमारी से पीड़ित मरीजों के लिए निशुल्क नेत्र जांच मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर एवं स्वास्थ्य शिविर कराया जा रहा है। ज्ञात हो कि पिछले कई सालों से महावीर इंटरनेशनल लांजी के द्वारा अनेक कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में कराएं जा रहे है। ऐसे कोई आंकड़े नहीं है पर अनुमान लगाया जा सकता है कि विशाल राऊत खोंगल के नेतृत्व में संचालित महावीर इंटरनेशनल ने अब तक आंखों की समस्या से जुझ रहे हजारों मरीजों का शिविर के माध्यम से निशुल्क उपचार करवा चुके हैं, और मोतियाबिंद से पीड़ित सैकड़ों मरीजों का निशुल्क ऑपरेशन भी किया जा चुका है। इसका सबसे ज्यादा लाभ गांव में निवास करने वाले लोगों को हुआ है। इस सफल यात्रा को जारी रखते हुए लांजी

क्षेत्र के विभिन्न स्थान जिनमें 24 दिसंबर को पालडोंगरी, 25 दिसंबर को पोंडी व 26 दिसंबर को बिसोनी में 30 दिसंबर को बहेला, लांजी, एवं भानेगांव में 31 दिसंबर को वनांचल ग्राम धिरी मुरूम एवं बोदादलखा में निशुल्क मोतियाबिंद जांच शिविर एवं आदिवासी ग्रामीण बाहुल्य में कम्बल का वितरण, शिक्षा से संबंधित सामग्री किताब ,कॉपी कंपाक्स, पेन स्टेशनरी की सामग्री का वितरण, वन ग्रामों में रहने वाले लोगों के लिए नवीन वस्त्र चप्पल जूते एवं वन ग्राम में ही भोजन भंडारा के साथ नए वर्ष के आगमन का स्वागत करने का कार्य आयोजित किया जा रहा है। वहीं शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी ,अंधकार में बसे वन ग्राम के अंदर गांव में ही भोजन भंडारा का आयोजन रखा गया है। साथ ही वन ग्राम आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार महिला सशक्तिकरण, कृषि एवं शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभांश के विषय पर भी कार्य किया जा रहा है साथ ही उक्त शिविर में आंखों की समस्या से पीड़ित मरीजों को उपस्थित होकर लाभ लेने की अपील विशाल राऊत खोंगल व महावीर इंटरनेशनल लांजी द्वारा किया गया है।

25 दिसंबर को डॉ राजेन्द्र वैद्य बीसोनी में उपलब्ध रहेंगे-महावीर इंटरनेशनल लांजी की पहल पर 25 दिसंबर दिन रविवार को डॉ राजेंद्र वैद्य एम.डी. मेडिसिन, हृदय रोग विशेषज्ञ एवं मधुमेह रोग विशेषज्ञ क्रीटिकल केयर गोंदिया के द्वारा इलाज किया जाएगा। डॉक्टर प्रतिमाह श्री केशरीनंदन मेडिकल स्टोर्स बिसोनी में प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक अपनी सेवाएं प्रतिमाह देंगे, जिसे भी अपनी जांच करवानी हो अपनी पुरानी फाइल और डॉक्टर से भेंट कर अपनी जांच करवा सकते हैं। उक्त मेडिकल स्टोर्स में धीरे-धीरे अन्य डॉक्टरों के द्वारा भी महिला एवं पुरुष की जांच की सेवाएं भी प्रारंभ रहेगी। लोगों की आवश्यकता के अनुसार डॉक्टर अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे।

कलपाथरी सरपंच की मांग पर विधायक हिना कावरे ने स्वीकृत करवाई कलपाथरी से अमेड़ा पंहुच मार्ग

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

विकासखण्ड अंतर्गत आने वाले ग्रामों में सड़कों का जाल बिछाने का कार्य क्षेत्र की विधायक हिना कावरे के द्वारा

प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान कर किया जा रहा है। विधायक सुश्री हिना कावरे के द्वारा क्षेत्र में सड़कों के विकास एवं पुल-पुलियाओं के निमार्ण के लिए सतत प्रयास जारी है। इसी के चलते क्षेत्र में अनेक सड़कों एवं पुलियाओं का निर्माण कर ग्रामीणों को सौगात दी है जिसके चलते आवागमन एवं परिवहन की सुविधाओं का लाभ ग्रामीणों को मिल सकें। इसी कड़ी में ग्राम पंचायत कलपाथरी के सरपंच लिकेश एडे के द्वारा विधायक हिना कावरे को मांग पत्र सौंपा गया था जिसमें मांग थी कि महादेव शिवधाम पहाड़ी के सामने कलपाथरी से अमेड़ा पंहुच मार्ग पर बिच में जिसकी दुरी लगभग एक किलोमीटर कच्ची सड़क है उसे पक्की सड़क में तब्दील कराने की मांग की गई थी, जिसे संज्ञान में लेकर विधायक के द्वारा प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। द्वितीय अनुपूरक बजट में कलपाथरी- पाथरगांव- अमेड़ा सड़क मार्ग जो कि महादेव शिवधाम पहाड़ी के समीप इसके 1 किलोमीटर निर्माण के लिए 1 करोड़ 5 लाख रुपए की लागत से सड़क निर्माण के लिए राशि स्वीकृत की गई है। कलपाथरी से बाजार चौक तक साथ ही और दो अन्य सड़कें जो बजट में पास करवाई है यह लांजी क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इस स्वीकृति पर सरपंच लिकेश एडे, जनपद सदस्य युवराज पटले, उपसरपंच लालचंद नौखरे एवं समस्त ग्रामीणों ने आभार व्यक्त किया है।

मालनपुर थाना पुलिस ने 719 हाईवे पर अतिक्रमण एवं यातायात व्यवस्था को लेकर लोगों को दी हिदायत

पहलवान सिंह राजावत पुष्पांजलि टुडे संवाददाता मालनपुर

हाईवे के किनारे व्यवसाय एवं चार पहिये एवं दुकानदारों द्वारा रोड के किनारे अतिक्रमण करने वालों को एस डी ओ पी एवं थाना प्रभारी मालनपुर ने पुलिस बल के साथ फ्लैगमार्च निकालकर अतिक्रमणकारियों को हिदायत दी और कहा कि रोड से अंदर की साइड दुकान लगाकर दुकानदारी करें जिससे की दुर्घटना कम हो एवं पार्किंग की अर्थव्यवस्था बनी रहे अन्यथा चालानी कार्रवाई की जाएगी फ्लैग मार्च मालनपुर थाने से लेकर हनुमान चौराह मनहार होटल तक निकाली ज्ञात रहे कि हनुमान चौराहे मालनपुर नेशनल हाईवे के किनारे दुकानें एवं टैक्सी लग जाने से रोड पर जाम लग जाता था जिससे आने जाने वाहन चालकों को परेशानी उठानी पड़ती है और एक्सीडेंट की घटना होने का भी अंदेशा रहता है इस क्रम में आज एस डी ओ पी गोहद सौरभ कुमार थाना प्रभारी विनोद विनायक करकरे व एसआई बलवंत सिंह यादव प्रधान आरक्षक राघवेंद्र शुक्ला प्रधान आरक्षक कमल माहौर आरक्षक नवीन तोमर आरक्षक सोनू सिंह व समस्त पुलिस बल ने लोगों को बताया कि अगर ऐसा पाया गया तो दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी

प्रेरक स्वयं सेवी संस्था के तत्वावधान मे विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय सम्मेलन का किया गया आयोजन

प्रेरक स्वयं सेवी संस्था गरियाबंद के तत्वावधान मे श्री रामगुलाम सिन्हा जी के मार्गदर्शन से विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय का सम्मेलन का आयोजन सामुदायिक भवन जनपद पंचायत गरियाबंद मे किया गया जिसमे शासन द्वारा मान्यता प्राप्त जैसे बिरहोर,बैगा,पांडो,अबुझमाड़िया,कमार,भुंजिया सामुदाय जिसकी स्थिति आज क्या है जो शासन के द्वारा विभिन्न विभिन्न योजना चला रही है ,उसका लाभ कितना मिल रहा है ,आज उनका जीवन शैली कैसे चल रही है, खेती के प्रति कितना जुड़ाव है उनका मुख्य व्यवसाय क्या है । इसके बारे मे उपस्थित समाज प्रमुख व उपस्थित समाज द्वारा गहन चर्चा चिन्तन मनन किया गया व भविष्य के लिए शासन से और जो संवेधानिक मांग है जिसे माननीय राज्यपाल महोदया से मांग करने की बात कही गई । कार्यक्रम का सुरुवात करने के पहले छ.ग. महतारी के छाया चित्र पर पूजा अर्चना कर एवं छ.ग. राज्यकीय गीत का गायन कर किया गया ।इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि श्री मति लोकेश्लरी नेताम माननीय सभापति कृषि जिला पंचायत गरियाबंद, श्रीमति लालिमा ठाकुर माननीय अध्यक्ष जनपद पंचायत गरियाबंद व जनजाति सामुदाय से श्री टीकमसिंह नागवंशी भुजिया समाज, समाज प्रमुख उपस्थित थे संस्था कार्यकर्ता श्री रामगुलाल सिन्हा,लिलेश मरकाम, महेंद्र परस, लुकेश्वरी नागेश, रामेश्वरी सोरी ,कोमल साहू, रोहिदास यादव, दिनेश साहू, श्री पति दीवान, राहुल खत्री , रामेश्वर कपिल, जागेश्वर मरकाम,भुपेश्वरी यादव, पुर्णिमा, हेमलता नेताम , तिलोत्तमा नेताम , श्याम बाई यादव , मकरध्वज पटेल ,गिरेश्वर पटेल एवं यशोदा ,भुनेश्वरी, भोज,और आदि साथी का सहयोग रहा।

मतांतरण और शिवलिंग खंडित करने की घटना पर दमोह बंद का आह्वान, बड़ी संख्या में पुलिस बल की तैनाती

दमोह.। दमोह में मतांतरण और शिवलिंग खंडित करने की घटना को लेकर विश्व

हिंदू परिषद और बजरंग दल द्वारा आज दमोह बंद का आह्वान किया गया है। सुबह छह बजे से ही हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता सड़कों पर निकल आए और लोगों से अपने प्रतिष्ठान बंद करने की अपील की। इस बंद को लेकर पुलिस भी सक्रिय हो गई और सुबह से ही शहर के सभी प्रमुख मार्गों पर बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात नजर आया। एडिशनल एसपी व सीएसपी स्वयं पूरे शहर का भ्रमण करते दिखे, ताकि कहीं भी कोई विवाद की स्थिति न बने।विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा हिंदू विरोधी गतिविधियों को लेकर यह दमोह बंद का आह्वान किया गया है, जिसमें मतांतरण और पिछले दिनों शिवलिंग को खंडित करने वाली घटना को लेकर भी हिंदूवादी संगठन के लोगों में आक्रोश है। साथ ही गौ हत्या भी जिले में बड़े पैमाने पर हो रही है। दो दिन पूर्व संगठन के कार्यकर्ताओं के द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया था और दमोह बंद की रूपरेखा तैयार की गई थी, जिसमें प्रमुख रुप से तीन बिंदु रखे गए थे। उनमें धर्मांतरण और शिवलिंग को खंडित करने वाली घटना साथ ही गौ हत्या पर रोक ना लगने को लेकर संगठन के कार्यकर्ताओं के द्वारा आक्रोश जताया गया था और 23 दिसंबर को बंद का आह्वान किया गया था। संगठन के कार्यकर्ता पूरे शहर का भ्रमण कर रहे हैं और जिन लोगों की दुकानें खुली है उन्हें दुकानें बंद करने के लिए कह रहे हैं ताकि इस बंद को समर्थन मिल सके।

दमोह नगर पालिका सीएमओ की कार्यशैली के विरोध में हड़ताल पर बैठे कर्मचारी

दमोह,। दमोह नगर पालिका के कर्मचारियों के द्वारा नगर पालिका सीएमओ की मनमानी के चलते एक दिवसीय हड़ताल की जा रही है । नगर पालिका कर्मचारियों के द्वारा मुख्य गेट पर तालाबंदी करते हुए समस्त कर्मचारी धरने पर बैठ गए हैं। कर्मचारी संघ के अध्यक्ष भागीरथ शर्मा ने बताया कि कर्मचारियों के वेतन से जीपीएस राशि काटे जाने के बाद भी वर्षों तक उनके खाते में राशि जमा नहीं की जा रही है। कर्मचारियों के वेतन से एनपीएस राशि काटने के बाद यह राशि भी जमा नहीं की जा रही है यदि नगरपालिका कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है तब उनके आश्रितों को अकारण ही भटका कर अनुकंपा नियुक्ति भी सीएमओ के द्वारा नहीं दी जा रही।इसके अलावा कर्मचारियों को अनावश्यक रूप से अनर्गल बातें की जा रही है। और नियमों के विपरीत प्रोफार्मा पदोन्नति के लिए निकाय के कर्मचारियों के विरुद्ध अनर्गल

बातें कहकर जानबूझकर पदोन्नति की कार्रवाई से वंचित किया जा रहा है। सभी कर्मचारी नगर पालिका के मुख्य गेट पर ताला लगाकर सामने बैठ कर नारेबाजी कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि नगर पालिका सीएमओ ने अपने बर्ताव में सुधार नहीं किया तो आने वाले समय में उग्र आंदोलन उनके द्वारा किया जाएगा। काफी देर प्रदर्शन करने के बाद नगर पालिका अध्यक्ष को कर्मचारियों ने ज्ञापन दिया जिसके बाद कामकाज शुरू हुआ।

आंगन में खेल रहा बालक कुएं में गिरा, पास में खेल रहे दोस्त की सूझबूझ से बची जान

दमोह,। कोतवाली थाना क्षेत्र के सिविल वार्ड में पवन जैन के कुएं में जाली के ऊपर खेल रहा बालक कुएं में अंदर गिर गया। उसके साथी ने जैसे ही यह घटना देखी अपने साथी को कुएं के अंदर आवाज लगाई और ढांढस बंधाया। साथ ही घर के अंदर जाकर पवन जैन को सूचित किया। उन्होंने तत्काल कुएं के अंदर उतरकर बालक को बाहर निकाला और एक बड़ी घटना घटित होने से बच गई। यह पूरी घटना घर में लगे सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गई।जैन की चश्मे की दुकान और सिविल वार्ड में उनका घर है, जहां एक कुआं है, जो जाली से ढंका रहता है, घर के आंगन में दो बच्चे खेल रहे थे। एक बच्चे कुएं के ऊपर जाली पर खड़ा था और इसी दौरान वह कुएं में गिर गया। पास ही उसका साथी साइकिल पर खड़ा था, जिसने आवाज लगाते हुए कहा कि कुएं में लगा हुआ पाइप पकड़ ले और वह दौड़कर घर के अंदर गया और पवन जैन को जानकारी दी। वह तत्काल अपने परिवार के लोगों के साथ बाहर आए और कुएं के अंदर उतरे और रस्सी के सहारे बालक को बाहर निकाला जैन तैरना भी जानते हैं, इसलिए उन्हे बच्चे को बाहर निकालने में ज्यादा देर नहीं लगी और कुछ ही मिनट में वह बालक कुएं से बाहर निकल आया, जिसके बाद परिवार के लोगों ने राहत की सांस ली।

जलसा के बाहर अब ना वैसी भीड़ दिखती है ना उत्साह', फैन्स से मुलाकात पर बोले अमिताभ बच्चन

अमिताभ बच्चन के बंगले के बाहर फैन्स का जमावड़ा लगा रहता है। खासकर हर रविवार को फैन्स की भारी भीड़ जुटती है। इस मौके पर अमिताभ अपने बंगले से बाहर आते हैं और फैन्स का अभिवादन करते हैं। हालांकि उनका मानना है कि अब जलसा के बाहर वैसा उत्साह नहीं दिखता और फैन्स की संख्या भी कम हुई है। अमिताभ ने अपने ब्लॉग में बताया कि वह जब भी घर के बाहर आए फैन्स से मिलने पहुंचते हैं तो हमेशा चप्पल उतार देते हैं। वह ऐसा क्यों करते हैं इसके पीछे की वजह भी बताई है।

जलसा के बाहर फैन्स से की मुलाकात-80 वर्षीय अमिताभ बच्चन लंबे समय से अपने घर के बाहर फैन्स के लिए बाहर आकर वेव करते हैं। कोरोना काल के दौरान उन्होंने फैन्स से मिलना बंद कर दिया था। अमिताभ बच्चन ने लिखा, 'मैंने ऑब्जर्व किया है कि संख्या में कमी आई है और उत्साह भी कम हो गया है। खुशी की चीखें अब मोबाइल कैमरे में ट्रांसफर हो गई हैं। यह साफ है कि समय आगे बढ़ गया है और कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता है।' अमिताभ ने आगे कहा, रविवार को जलसा के गेट पर फिर से मुलाकात शुरू हुई। हालांकि सावधानियां भी बरती गईं।

छठ पर बोले अमिताभ-अमिताभ ने जलसा के अंदर की कई तस्वीरें शेयर की हैं जहां दिवाली की सजावट देखी जा सकती है। उन्होंने छठ पूजा की भी तस्वीरें शेयर की हैं और लिखा, 'भगवान सूर्य की उपासना छठ पूजा है... परोपकार और भलाई के लिए... मुख्य रूप से बिहार और यूपी के लोग इकट्ठा होते हैं... भक्तों की भारी संख्या।'

केटरीना के बदले लुक्स को देख फैंस बोले, खूबसूरत चेहरे को क्यों बिगाड़ा

बहुत से एक्टर्स अपनी झुर्रियों, सैगी स्किन को छिपाने के लिए और यंग दिखने के लिए कई तरह के मेडिकल ट्रीटमेंट्स और सर्जरी का सहारा ले चुके हैं। लेकिन अमूमन एक्टर करवाई गए सर्जरी को लेकर खुलासा करने से बचते हैं, मगर इस बारे एक्ट्रेस कोईना मित्रा जरूर बात कर चुकी हैं। कोईना मित्रा ने इस बात को स्वीकारा था कि नाक की सर्जरी करवाने के बाद उनका करियर खत्म हो गया। अब हाल ही में प्लास्टिक सर्जरी को लेकर फेमस एक्ट्रेस कटरीना कैफ को खूब ट्रोल किया जा रहा है। हाल ही में कटरीना बिग बॉस शो के वीकेंड के वार एपिसोड में पहुंची, शो में उनके लुक्स काफी अलग नजर आए जिसे लेकर फैंस ने उन्हें ट्रोल करना शुरू कर दिया।

मासूम दिखने वाली कटरीना को खोजना मुश्किल -बिग बॉस शो में येलो रंग की वन पीस ड्रेस में पहुंची कटरीना के लुक्स बेहद बदले-बदले नजर आए। यहां उनकी ड्रेसिंग सेंस नहीं बल्कि चेहरे की बात कर रहे हैं। शो में उनके पफ्ड चेहरे को देखकर फैंस इसे प्लास्टिक सर्जरी का नतीजा बता रहे हैं। कटरीना ने प्लास्टिक सर्जरी करवाई है या नई इस बारे में कुछ कहा नहीं कहा जा सकता लेकिन फैंस कटरीना के चेहरे को बोटोक्स ब्यूटी बता रहे हैं। कुछ फैंस लिख रहे हैं कि कटरीना ने अपने खूबसूरत चेहरे को बिगाड़ लिया।

बंगाली अभिनेत्री सोनाली चक्रवर्ती का निधन, सीएम ममता बनर्जी ने दी श्रद्धांजलि

दिग्गज बंगाली अभिनेत्री सोनाली चक्रवर्ती का 59 साल की उम्र में निधन हो गया। सोनाली लंबे समय से बीमारी से पीड़ित थीं। वह कोलकाता के निजी अस्पताल में भर्ती थीं। सोनाली अपने पति और बेटी को पीछे छोड़ गई हैं। उनके पति शंकर चक्रवर्ती भी अभिनेता हैं। सोनाली बंगाली टेलीविजन का जाना-पहचाना चेहरा हैं। वह लिवर संबंधित समस्याओं से जूझ रही थीं। कुछ महीनों से उनका इलाज चल रहा था। सोमवार को उन्होंने अंतिम सांस ली।

टीवी सीरियल और फिल्मों में किया काम-सोनाली ने पॉपुलर बंगाली शो घाटछोड़ा में काम किया है जिसमें सोलंकी रॉय और गौरव चटर्जी मुख्य भूमिका में थे। सोनाली ने अपने पति शंकर चक्रवर्ती के साथ कई बंगाली टीवी सीरियल और फिल्मों में काम किया। उन्होंने कई शोज की एंकरिग भी की। सोनाली की मुख्य फिल्मों में दादर कीर्ति, हार जीत और बंधन सहित अन्य है।

सीएम ने जताया शोक-पश्चिम बंगाली की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने फेसबुक पर एक पोस्ट लिखकर दिवंगत अभिनेत्री को श्रद्धांजलि दी और इसे कला जगत के लिए बड़ा नुकसान बताया। उन्होंने सोनाली के परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

'लड़की के साथ होता तोड़', विराट कोहली के कमरे का वीडियो लीक होने पर बोलीं उर्वशी रौतेला

विराट कोहली के होटल के कमरे का वीडियो लीक होने पर सनसनी मच गई। विराट ने वायरल हुए वीडियो को पोस्ट कर नाराजगी जाहिर की है जिसके बाद अनुष्का शर्मा ने भी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक नोट लिखा। विराट के पोस्ट पर कई बॉलीवुड सेलिब्रिटीज ने कमेंट किया और इस पूरी घटना पर हैरानी जताई और इस तरह के वीडियो को लेकर आपत्ति जताई। इन सबके बीच उर्वशी रौतेला का कमेंट चर्चा में आ गया। उर्वशी रौतेला ने इस तरह की हरकत को बेशर्मी भरा बताया है।

उर्वशी का पोस्ट-उर्वशी ने विराट के पोस्ट पर कमेंट किया और इंस्टा स्टोरी पर भी इसे शेयर किया। वह लिखती हैं, 'बिल्कुल, ये बहुत खराब और बेशर्मी भरा है। सोचिए वो ऐसा ही किसी लड़की के कमरे में करते तो?

आयुष्मान खुराना और शेफाली शाह के लिए देख सकते हैं डॉक्टर जी,जानें कहां मात खाई फिल्म

डॉक्टर जी एक टिपिकल आयुष्मान खुराना की फिल्म है। एक छोटे शहर का लड़का, जो ऐसी सिचुएशन में फंस जाता है, जो सोसायटी के लिए अलग है। धीरे - धीरे दोस्तों और परिवार की मदद से उसे समझ आता है कि लोग क्या सोंचेगे से कई ज्यादा है जिंदगी। जिंदगी का हर पल जीना चाहिए बिना इस सोच के लोग क्या कहेंगे। फिल्म का प्लॉट यही है, जिसे इससे पहले बधाई हो, चंडीगढ़ करे आशिकी और विकी डोनर में भी देख चुके हैं। इस फिल्म का टैबू सब्जेक्ट है कि आयुष्मान खुराना अकेले भोपाल मेडिकल कॉलेज के मेल गायनोलॉजिस्ट हैं। डॉक्टर जी एक ऐसी फिल्म है,जिसका फर्स्ट हाफ उसके सेकेंड हाफ से एक दम अलग है। फिल्म का पहला पार्ट जहां बेहतरीन जोक्स से भरपूर है तो दूसरा पार्ट इससे एक दम अलग नए युग की कहानी को बयां करता है।

इन वजहों से मेकअप करने के बाद अजीबलगने लगता है चेहरा, इन कॉमन मिस्टेक को जरूर जानें

क्या बहुत कोशिशों के बाद भी मेकअप के बाद आपका चेहरा काला दिखने लगता है? या फिर आपको अपने चेहरा मेकअप अप्लाई करने के बाद अजीब दिखता है? अगर ऐसा है, तो हो सकता है कि कुछ बेसिक गलतियों से आपका मेकअप ठीक से चेहरे पर नहीं लग पाता होगा। आइए, जानते हैं कि वे कौन-सी मेकअप मिस्टेक्स हैं, जिनकी वजह से आपका फेस अजीब-सा लगने लगता है। आपको यह छोटे-छोटे मेकअप टिप्स जरूर याद रखने चाहिए, जिससे कि आपका मेकअप नेचुरल नजर आए।

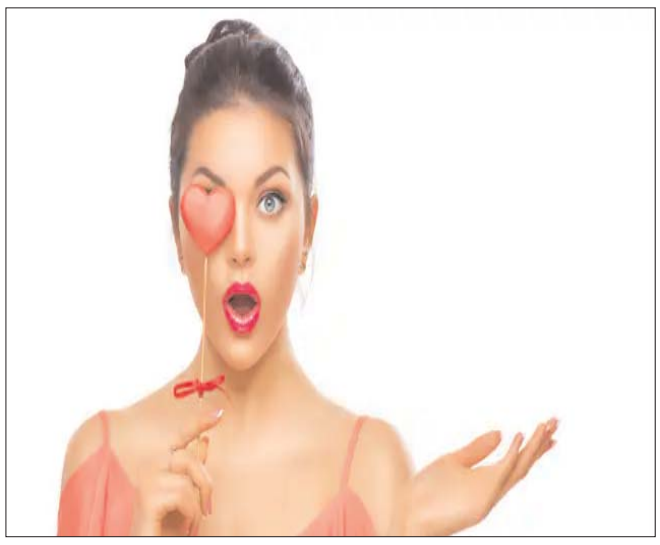

स्क्रबिंग न करना -आपने अगर बहुत दिनों से चेहरे पर स्क्रबिंग नहीं की है, तो इसकी वजह से आपकी स्किन पील होने लग जाएगी। जिससे अगर आप फाउंडेशन अप्लाई करेंगे, तो यह ठीक से ब्लेंड नहीं हो पाएगा। ऐसे में डेड स्किन को रिमूव करने के लिए स्क्रब जरूर करें।

मॉइस्चराइजर नहीं लगाना -आपकी स्किन कितनी भी ऑयली क्यों न हो लेकिन आपको मेकअप से पहले स्किन को हाइड्रेट करना बहुत जरूरी है, वरना आपका मेकअप पैची नजर आएगा। ऑयली स्किन के लिए जेल बेस्ड मॉइस्चराइजर सही रहता है।

गलत फाउंडेशन -आपको अपनी स्किनटोन से मैच करता हुआ फाउंडेशन लगाना चाहिए। आप अगर बहुत ज्यादा व्हाइट कास्ट वाला फाउंडेशन लगाते हैं, तो यह आपके चेहरे पर सही से नहीं लग पाता है। थोड़ी-देर बाद आपका मेकअप ऑक्सीडाइज होकर आपकी स्किन काली लगने लगती है।

ओवर मेकअप -स्किन प्रॉब्लम्स को दूर करने के लिए आपको अच्छे स्किन केयर रूटीन की जरूरत है। आप अगर अपनी हैवी स्किन प्रॉब्लम्स को मेकअप से दूर करने की कोशिश करेंगे, तो इससे आपका मेकअप ओवर लगेगा।

हेयरफॉल के डर से न छोड़ें कंडीशनर का इस्तेमाल जानें इसे बालों में अप्लाई करने का सही तरीका

सर्दियां शुरू होते ही बाल बहुत ज्यादा रूखे और बेजान नजर आने लग जाते हैं। कुछ लोगों को तो डैंड्रफ की प्रॉब्लम भी शुरू हो जाती है। ऐसे में बहुत जरूरी है कि बालों में हाइड्रेशन बनाकर रखें। बालों को हाइड्रेट रहने का तरीका यह है कि हेयर मास्क का महीने में दो बार इस्तेमाल जरूर करें। वहीं, शैम्पू करने के बाद बालों में कंडीशनर लगाना भी बहुत जरूरी है। कंडीशनर अप्लाई करने की बात करें, तो कई लोग कंडीशनर लगाना इसलिए भी छो? देते हैं क्योंकि उन्हें हेयरफॉल शुरू हो जाता है। ऐसे में वे बालों में कंडीशनर लगाना भी छो? देते हैं। कंडीशनर न लगाने से बालों में हाइड्रेशन की कमी हो जाती है। ऐसे में बहुत जरूरी है कि आप कंडीशनर छो?ने की बजाय इसे अप्लाई करने का सही तरीका जानें।

बालों में कैसे लगाएं कंडीशनर -लों में शैम्पू करने के बाद आपको बालों से एक्सट्रा पानी निचो? लेना है। अब कंडीशनर की थो?ी-सी मात्रा लें। अंगुलियों पर कंडीशनर लेकर इसे बालों की लेंथ में लगाएं। याद रखें कि स्कैल्प में कंडीशनर न लगे। इससे हेयरफॉल हो सकता है। ऐसे में कंडीशनर को अच्छी तरह नीचे के सिरों तक लगा लें। अब इसे 5-7 मिनट के लिए ऐसे ही रखे रहने दें। अब आपने जहां-जहां कंडीशनर लगाया है, उसे पानी से धो लें। आपको फिर से स्कैल्प पर पानी डालकर सिर धोने की जरूरत नहीं है। कंडीशनर लगे बालों को अच्छी तरह धोएं, ताकि बालों से कंडीशनर अच्छी तरह साफ हो जाए। याद रखें कि बालों में कंडीशनर लगाने के बाद बालों को खींचे नहीं। इसे धोने के बाद तौलिए से अच्छी तरह साफ कर लें। कंडीशनर लगाने के बाद 10-15 बालों के स्टेंथ टूटने नॉर्मल है।

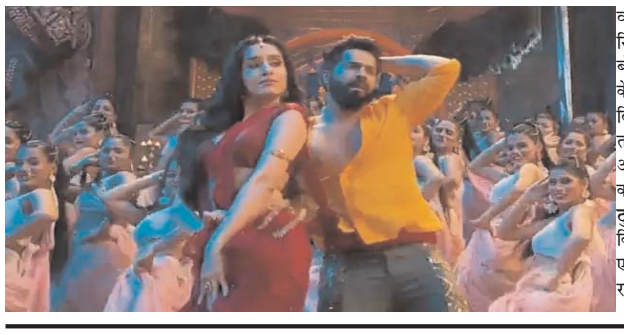

स्त्री-2 कब होगी रिलीज होगी जानिए ठुमकेश्वरी सॉन्ग में श्रद्धा कपूर की एंट्री का मतलब

वरुण धवन की अपकमिंग फिल्म भेड़िया का गाना ठुमकेश्वरी रिलीज के साथ ही काफी पॉपुलर हो गया है। न सिर्फ गाने के बोल और इसके बीट्स काफी इंप्रेसिव हैं बल्कि म्यूजिक वीडियो के आखिरी में श्रद्धा कपूर की एंट्री ने सभी को चौंका कर रख दिया। इस वीडियो में श्रद्धा कपूर को देखकर लोगों ने तरह-तरह के कयास लगाने शुरू कर दिया और कहा कि शायद अमर कौशिक स्त्री और भेड़िया यूनिवर्स को एक साथ लाने की कोशिश करेंगे।

ठुमकेश्वरी सॉन्ग में स्ह्लह्द्धद्द की एंट्री क्यों कराई-बता दें कि ये दोनों ही फिल्में अमर कौशिक की बनाई हुई हैं और जहां एक तरफ स्त्री ब्लॉकबस्टर हिट साबित हुई थी वहीं माना जा रहा है कि वरुण धवन की भेड़िया भी बॉक्स ऑफिस

थिएटर्स से राम सेतु को रिप्लेस कर रही है कांतारा एक ही हफ्ते में फुस्स हुई अक्षय की फिल्म

दिवाली पर रिलीज हुई अक्षय कुमार और जैकलीन फर्नांडिस स्टारर फिल्म राम सेतु की शुरुआत तो अच्छी रही लेकिन अब एक ही हफ्ते में यह फिल्म पानी मांगती नजर आ रही है। फिल्म को रिलीज हुआ आज सातवां दिन है और फिल्म अभी तक 57 करोड़ रुपये का बिजनेस कर चुकी है। वहीं थैंक गॉड ने 6 दिन में 27 करोड़ रुपये कमा लिए हैं। हालांकि अब कोई खास भीड़ थिएटर्स में नहीं पहुंच रही है, ऐसे में थिएटर मालिकों ने अपने प्लान में बदलाव किया है।

राम सेतु और थैंक गॉड हुई फुस्स-बॉलीवुड हंगामा की एक रिपोर्ट के मुताबिक कन्नड़ फिल्म कांतारा को रिलीज हुए तीसरा हफ्ता है और अभी भी फिल्म का ऑक्यूपेंसी लेवल 40 पर्सेंट तक है। यानि राम सेतु और थैंक गॉड जैसी फिल्मों को देखने के लिए जहां सिनेमाघरों में 30 प्रतिशत टिकटें बिक रही हैं वहीं कांतारा अकेले तीन हफ्ते बाद भी जलवा कायम किए हुए है।

कांतारा को मिल रहा ज्यादा सपोर्ट-शनिवार और रविवार को छुट्टी का दिन होने के बावजूद भी कांतारा देखने के लिए लोग पहुंचे, जबकि उन्होंने राम सेतु और थैंक गॉड जैसी फिल्मों को कुछ खास रिस्पॉन्स नहीं दिया। छुट्टी के दिन जब फिल्मों को खास रिस्पॉन्स नहीं मिल रहा है तो ऐसे में वीक डेज में तो किसी भी बात की उम्मीद करना और भी मुश्किल हो जाता है

बेहट में झिलमिल नदी के किनारे ध्रुपद केंद्र में सजी तानसेन समारोह की नौंवी सभा, श्रोताओं ने लिया आनंद

ग्वालियर। संगीत सम्राट तानसेन की जन्मस्थली बेहट में सजी नौंवी संगीत सभा में बहे सुर मखमली अहसास करा गए। संगीत कलाकारों ने ऐसा झूमके गाया-बजाया कि रसिक सुध-बुध खो बैठे। इस साल के तानसेन समारोह के तहत यह सभा बेहट में शुक्रवार को भगवान भोले के मंदिर और झिलमिल नदी के समीप स्थित ध्रुपद केन्द्र परिसर में सजी। यह वही जगह थी जहाँ संगीत सम्राट का बचपन संगीत साधना और बकरियाँ चराते हुए बीता था। लोक धारणा है कि तानसेन की तान से ही निर्जन में बना भगवान शिव का मंदिर तिरछा हो गया था। यह भी किंवदंती है कि 10 वर्षीय बेजुबान बालक तन्ना उर्फ तनसुख भगवान भोले का वरदान पाकर संगीत सम्राट तानसेन बन गया।बेहट में सजी संगीत सभा में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गेश कुँअर सिंह जाटव सहित अन्य जनप्रतिनिधि गण एवं संभाग आयुक्त श्री दीपक सिंह ने सपत्नीक स्वर लहरियों का आनंद उठाया। उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत कला अकादमी के निदेशक जयंत माधव भिसे, क्षेत्रीय एसडीएम श्रीमती पुष्पा पुषाम व जनपद पंचायत के सीईओ राजीव मिश्रा सहित अन्य अधिकारी, समीपवर्ती ग्रामों और ग्वालियर व अन्य शहरों से बड़ी संख्या में रसिक इस सभा का आनंद लेने पहुँचे थे। सभा का संचालन अशोक आनंद ने किया।

ध्रुपद गायन से हुई सभा की शुरूआत-तानसेन की देहरी पर संगीत सभा की शुरूआत पारंपरिक ढंग से ध्रुपद केन्द्र बेहट के ध्रुपद गायन से हुई। यहाँ के बच्चों ने राग ÷अहीर भैरव÷ में ध्रुपद रचना प्रस्तुत की। ताल-चौताल में निबद्ध बंदिश के बोल थे चलो सखी ब्रजराज। इसके बाद सूल ताल में बंदिश ÷ दुर्गेश भवानी दयानी÷ का सुमधुर गायन किया। इस प्रस्तुति पर ध्रुपद केन्द्र के बच्चों को रसिकों की भरपूर सराहना मिली। पखावज पर संजय

पंत आगले ने कसी हुई संगत की।

सजन की सांवरी सूरत-चंदोगढ़ से पधारे प्रख्यात गायक प्रो हरविंदर सिंह ने जब सुर सम्राट तानसेन की दहलीज पर राग ÷बहादुरी तोड़ी÷ में तीन ताल में पिरोकर छोटा ख्याल ÷ सजन की सांवरी सूरत को बड़े भावपूर्ण अंदाज में गाया तो गुणीय रसिक विरह रस में डूब गए। उन्होंने इसी राग में अपने गायन का आगाड़ किया। मंत्रमुग्ध करने वाली अलापचारी के साथ एक ताल में निबद्ध बंदिश ÷महादेव देवन पति पारवति पति÷ का गायन कर गान महर्षि तानसेन के आराध्य भगवान भोले के श्रीचरणों में स्वरांजलि अर्पित की। भैरवी में रसभीनी ठुमरी ÷वन वन धुन सुन÷ गाकर उन्होंने अपने गायन को विराम दिया। प्रो. हरविंदर सिंह ग्वालियर एवं आगरा घराने की गायकी में सिद्धहस्त हैं। उनके गायन में मनोज पाटीदार ने तबले पर और धर्मनारायण मिश्र ने हारमोनियम पर दिलकश संगत की।

तबले की जुगलबंदी से गूँजी बेहट की फिड़ा-बेहट की सभा में दूसरी प्रस्तुति में तबला वादन की जुगलबंदी हुई। ग्वालियर के उदयीमान युवा तबलाकार विनय बिन्दे एवं प्रणव पराडकर के तबला वादन से मनोरम अमराई और झिलमिल नदी का शांत किनारा संगीतमय हो गया। सुप्रसिद्ध तबला वादक स्व पण्डित रामचन्द्र तैलंग से इन दोनों कलाकारों ने गुरू-शिष्य परंपरा के तहत तबला वादन के हुनर सीखे हैं। युवा कलाकारों की जोड़ी ने अपने वादन के लिये ताल-तीन ताल का चयन किया, जिसमें कायदा व परन प्रस्तुत की। लग्गी बड़ी व सवाल जवाब तथा विभिन्न घरानों की बंदिशों की प्रस्तुति सुन रसिक मंत्रमुग्ध हो गए। तबला जुगलबंदी में सारंगी पर उस्ताद हमीद खां और हारमोनियम पर नवीन कौशल ने नफासत भरी संगत की।

उदयीमान गायक आदित्य शर्मा की ध्रुपद गायकी ने बांधा समा -किशोरवय आयु से ही बड़े-बड़े संगीतज्ञों के चहेते बन चुके ग्वालियर के युवा गायक आदित्य शर्मा की बेहट की संगीत सभा में अंतिम कलाकार के रूप में प्रस्तुति हुई। उन्होंने अपने गायन के लिये राग ÷मुल्तानी÷ का चयन किया। मधुर एवं दानेदार आवाज के धनी आदित्य शर्मा ने जब अलापचारी के बाद चौताल में निबद्ध बंदिश ÷बंशीधर पिनाक÷ का गायन किया तो बड़ी संख्या में मौजूद रसिक वाह-वाह कर उठे। ध्रुपद गुरू अभिजीत सुखदाणे के शिष्य आदित्य शर्मा ने बहुत कम आयु में ध्रुपद गायकी के क्षेत्र में नाम कमाया है। इनके साथ पखावज पर पं. संजय पंत आगले ने शानदार संगत की।

24 दिसम्बर को मनेगा राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस

ग्वालियर । हर साल की तरह ग्वालियर जिले में भी 24 दिसम्बर को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया जायेगा। राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस के उपलक्ष्य में इस दिन कलेक्ट्रेट स्थित स्व. टी. धर्माराव सभागार (जनसुनवाई कक्ष) में दोपहर एक बजे से उपभोक्ताओं को जागरूक करने एवं उनके हितों के संरक्षण के उद्देश्य को लेकर संगोष्ठी व प्रदर्शनी आयोजित होगी। जिला आपूर्ति नियंत्रक से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस कार्यक्रम में विद्युत, दूरसंचार, बैंक, बीमा, खाद्य एवं औषधि प्रशासन, नापतौल व ऑइल कंपनियों द्वारा उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों की जानकारी दी जायेगी। साथ ही प्रदर्शनी भी लगाई जायेगी। इस आयोजन में जिला उपभोक्ता फोरम के सदस्यगणों के साथ-साथ के स्वैच्छिक संगठनों को भी आमंत्रित किया गया है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस के लिये ÷उपभोक्ता आयोगों में प्रकरणों का प्रभावी निराकरण÷ की थीम निर्धारित की गई है। इस विषय वस्तु को भी आयोजन में शामिल किया गया है।

प्रधानमंत्री आवास योजना-2: नई योजना सुराज नाम से जल्द, अतिक्रमण मुक्त भूमि पर बनेगी

ग्वालियर। प्रधानमंत्री आवास योजना के आवासों की ग्वालियर में अचानक बड़ी लोकप्रियता और पूरी बुकिंग के बाद नगर निगम इस योजना की दूसरी स्कीम जल्द लागू करने वाली हैं। निगम को मात्र सरकार की स्वीकृति का इंतजार हैं। यह नई स्कीम उन जमीनों पर बनाई जायेगी जो अभी हाल ही में भूमाफियाओं व अतिक्रमण से मुक्त कराई गई हैं। नगर निगम कमिश्नर ने कहा कि बस स्वीकृति का इंतजार है। स्वीकृति मिलते ही इसका काम शुरू कर दिया जायेगा, ताकि प्रधानमंत्री जी की मंशा अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार आवास ले सकें।नगर निगम कमिश्नर किशोर कान्याल ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना की यह स्कीम अब सुराज नाम से होगी। इसके लिये हमारे पास भरपूर जमीन बेहतर लोकेशनों पर है। इस योजना में प्रधानमंत्री आवास योजना में आवेदन से वंचित कर गये पात्र लोगों को पुनः आवास लेने का मौका उपलब्ध कराया जायेगा। निगम कमिश्नर किशोर कान्याल ने बताया कि सुराज नाम से लांच होने वाली इस स्कीम में अतिक्रमण व दबंग भूमाफियाओं से मुक्त कराई गई भूमि पर आवास बनाये जायेंगे और इन्हें भी पूर्णतः सुविधाओं से परिपूर्ण किया जायेगा। जहां बिजली, पानी, सड़क, पार्क बेहतर से बेहतर होंगे।कान्याल ने कहा कि नई बुकिंग के लिये भी लगातार लोग आ रहे हैं। दरअसल प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत ग्वालियर में बने आवास उच्चतम गुणवत्तापूर्ण हैं। इन आवासों की सराहना स्वयं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह व नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेन्द्र सिंह, प्रमुख सचिव नगरीय प्रशासन ने की हैं। कान्याल ने बताया कि उन्होंने सरकार को नये आवास निर्माण के लिये प्रस्ताव भेजा हैं। हमें उम्मीद है कि सरकार से जल्दी ही स्वीकृति मिल जायेगी। इसके बाद विधिवत प्रक्रिया कर नये आवासों का निर्माण शुरू किया जायेगा।

बडता कोरोना: ग्वालियर कलेक्टर ने कोरोना बचाव की एडवायजरी जारी की

ग्वालियर। कोविड-19 वायरस ओमिक्रान के वैश्विक स्तर पर बड रहे मरीजों से पूरे विश्व में चिंता बड रही है। इसी को देखते हुये भारत सरकार ने विभिन्न दिशा निर्देश जारी किये हैं। इन दिशा निर्देशों के तहत ग्वालियर कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने कोरोना की रोकथाम और बचाव के लिए एडवायजरी जारी की है।

छूट तो जारी, लेकिन कोरोना गंभीर हुआ तो मेला पर पुनः विचार करेंगे: सखलेचा

ग्वालियर। मध्यप्रदेश के एमएसएमई मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा है कि ग्वालियर व्यापार मेला में सरकार ने स्थानीय व्यापारियों की मांग को देखते हुये आटोमोबाइल सेक्टर में वाहनों के आरटीओ पंजीयन टैक्स में 50 प्रतिशत छूट की घोषणा कर दी है और इसके आदेश भी शीघ्र ही पहुंच जायेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि ग्वालियर मेला लगाने की तैयारियां जोरों से जारी हैं और इसका विधिवत शीघ्र शुभारंभ भी किया जायेगा।संक्षिप्त चर्चा में एमएसएमई मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने एक सवाल पूछे जाने पर कि कोरोना की स्थिति के बेहद गंभीर चिंताजनक खबरों के बीच क्या ग्वालियर व्यापार मेला लगाना उचित रहेगा या सरकार इस पर दोबारा विचार कर सकती है के जबाब में मंत्री सखलेचा ने कहा कि कोरोना की गंभीर स्थिति पर हम ग्वालियर मेला लगाने या लगाने पर पुनः विचार भी कर सकते हैं, क्योंकि सरकार आम आदमी के स्वास्थ्य और उसकी जान की चिंता पहले करेगी। मंत्री सखलेचा ने कहा कि हालांकि अभी ऐसी गंभीर स्थिति दिखाई नहीं दे रही है, निकट भविष्य में कोरोना पांव पसारेगा तो हम पुनः मेला पर विचार करेंगे।वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक व्यापार मेला के इस बार के आयोजन पर कोरोना रूपी काले बादल मंडराने लगे है। अचानक देश में दो दिन के भीतर ही कोरोना संकट को लेकर मैराथन बैठकें हुई और एडवायजरी तक जारी हो गई है। एमस दिल्ली

में तो मास्क अनिवार्य कर दिया गया है और 5 लोगों के इकटठे होने तक पर रोक लगा दी गई है। ऐसे में ग्वालियर मेला कैसे लगेगा इस पर संकट छा गया है। हालांकि मेला में दुकानदार दुकानें लगा रहे हैं और वाहनों में आरटीओ छूट का भी ऐलान सरकार द्वारा कर दिया गया है।कोरोना पर कल देश के स्वास्थ्य मंत्री द्वारा ली गई बैठक के बाद आज प्रधानमंत्री ने उच्च स्तरीय बैठक कर कई दिशा निर्देश जारी कर दिये हैं। जिसमे पुनः हवाई अडडों पर आरटीपीसीआर शुरू होगी। इधर ग्वालियर में व्यापार मेला के आयोजन को लेकर तैयारियां जोरशोर से चल रही है। दुकानदार पैसा जमा कर दुकानें बनाने लगे है। झूला सेक्टर पूरा तैयार हो गया है। खानपान के स्टाल लग चुके हैं। शेष का काम जारी है। टेण्डर प्रक्रिया भी पूरी हो गई है। अब आज केन्द्र के निर्देश के बाद ग्वालियर कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने कोरोना रोकथाम के लिए एडवायजरी जारी कर दी है। ऐसे में अब सवाल उठता है कि मेला आयोजन कैसे होगा। जब एडवायजरी में ही भीडभा? वाले स्थानों पर जाने से बचने की सलाह दी गई है। मेला में भी? उम?गी और लोग झूला, खानपान और खरीददारी का आनंद भी लेंगे। साफ है कि एक बार फिर ग्वालियर के ऐतिहासिक मेला में कोरोना रूपी काले बादल मंडराने लगे है। अगर आयोजन पर रोक लगी तो पहले से परेशान व्यापारी की कमर टूट सकती है ।

ऑटोमोबाइल सेक्टर में आरटीओ टैक्स छूट की घोषणा, व्यवसायियों में खुशी की लहर

ग्वालियर। श्रीमन्त माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला व्यापारी संघ के पदाधिकारियों एवं ऑटोमोबाइल व्यापारियों ने ग्वालियर मेला के ऑटोमोबाइल सेक्टर में राज्य शासन द्वारा आरटीओ टैक्स में पचास प्रतिशत छूट दिए जाने की घोषणा पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, मुख्यमन्त्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रदेश के परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत, प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट एवं एमएसएमई मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा का हृदय से आभार व्यक्त किया है। ग्वालियर व्यापार मेला व्यापारी संघ के अध्यक्ष महेन्द्र भदकारिया, सचिव महेश मुदगल, उमेश उप्पल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता अनिल पुनियानी, उमेश उप्पल, भाजपा नेता आशीष प्रताप सिंह राठौर ने आभार व्यक्त करते हुए कहा है कि मेला ऑटोमोबाइल सेक्टर में आरटीओ टैक्स छूट दिए जाने के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया, मुख्यमन्त्री शिवराज सिंह, प्रदेश के परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपूत एवं प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट को मेला व्यापारी संघ के पदाधिकारियों एवं ऑटोमोबाइल व्यापारियों ने कई बार ज्ञापन, मांगपत्र भेंटकर मेला में आरटीओ टैक्स तत्काल छूट दिए जाने का आदेश जारी करने का आग्रह किया था। मेला व्यापारी संघ को अपने इस संघर्ष पूर्ण अभियान में सफलता मिली है।मेला व्यापारी संघ के अध्यक्ष महेंद्र भदकारिया एवं

वरिष्ठ उपाध्यक्ष व प्रवक्ता अनिल पुनियानी ने वरिष्ठ नेताओं को भेजे धन्यवाद पत्र में कहा कि महान सिंधिया शासकों द्वारा करीब सवा सौ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया गया ऐतिहासिक ग्वालियर व्यापार मेला आज राष्ट्रीय स्तर पर गौरवशाली स्थान अर्जित कर चुका है। ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने महान पूर्वजों द्वारा स्थापित ग्वालियर मेला को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुप्रतिष्ठित करने एवं इसे उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसित करने के लिए प्रयासरत हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया, परिवहन मंत्री गोविंद राजपूत एवं सिलावट के अथक प्रयास से ही विगत एक दशक से ग्वालियर मेला के ऑटोमोबाइल सेक्टर को वाहनों की खरीद फरोख्त पर आरटीओ टैक्स पर छूट दी जाती रही है। कोरोना महामारी के चलते विगत दो वर्ष से ग्वालियर मेला का आयोजन नहीं हो सका था। इसलिए आर्थिक मंदी को झेल रहे ऑटोमोबाइल सेक्टर एवं अन्य मेला व्यापारियों को बूस्टर देने के लिए इस वर्ष मेला के ऑटोमोबाइल सेक्टर में आरटीओ टैक्स में अधिकाधिक छूट दिया जाना अत्यावश्यक था। यह हर्ष एवं संतोष की बात है कि राज्य शासन ने मेला व्यापारियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए एवं शासन के प्रति अपेक्षाओं को समझते हुए ऑटोमोबाइल सेक्टर में आरटीओ टैक्स में छूट दिए जाने के लिए आदेश जारी कर दिया है।

देश के प्रति समर्पण की कोई उम्र नहीं होती नीरु ज्ञानी

ग्वालियर। देश के प्रति कर्तव्य निभाने एवं समर्पण की कोई उम्र नहीं होती बाल वीरो का बलिदान हमें यही प्रेरणा देता है। मध्य प्रदेश के सभी विद्यार्थी एवं आने वाली पीड़ी इस अप्रतिम बलिदान से परिचित हो सकें इस निमित्त बाल वीर सप्ताह का आयोजन एक महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगा। उपरोक्त उदगार पंजाबी साहित्य अकादमी की निदेशक श्रीमती नीरु सिंह ज्ञानी ने शासकीय उमावि कन्या शिदे की छावनी और शासकीय उमावि मॉडल डीडी नगर में बाल वीर सप्ताह के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने कहा कि यह गर्व का विषय है मध्यप्रदेश सरकार ने लोक शिक्षण संचालनालय के माध्यम से विद्यार्थियो के बीच श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के पूरे परिवार द्वारा दिये गये बलिदान को प्रदेश के विद्यार्थियो के बीच गुँजायमान हो रहा है। उन्होने कहा-शिक्षा का जलाया हुआ दीपक पूरे समाज को रोशन करता है। पंजाबी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश द्वारा वीर साहिबड़ादों पर केन्द्रित तालगुरू प्रोडक्शन द्वारा तैयार की गई डॉक्यूमेंट्री एवं सिख फाउण्डेशन, नई दिल्ली द्वारा इतिहास लेख को अकादमी द्वारा लोक शिक्षण संचालनालय, को उपलब्ध कराया गया है, जिसका प्रदर्शन प्रदेश भर के सात हजार से अधिक विद्यालयों में किया जाएगा। प्रदेश के विद्यालयों में पंजाबी साहित्य अकादमी द्वारा निबंध प्रतियोगिताएं भी कराई जाएंगी। जिला शिक्षा अधिकारी अजय कटियार ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव में भारत के गौरवशाली इतिहास को सम्मानित करने का अवसर मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरु गोबिंद सिंह के साहिबजादों एवं माता गूजरी जी की शहादत, शौर्य और पराक्रम को स्मरण करने के लिए पूरे भारत में ÷वीर बाल दिवस÷ मनाने का निर्णय लिया है।

बटेश्वर की शिव वीथिका में स्वरों का मेला

ग्वालियर। मुरैना जिले में स्थित बटेश्वर में छठी शताब्दी के अनेक शिव मंदिर हैं। जो कालांतर में ध्वस्त हो गए

थे, पुरातत्व विभाग इन मंदिरों का पुनर्निर्माण कर रहा है। गुरूवार की सुबह जब यहां रागदारी सजी तो ये मंदिर मानो जीवंत हो उठे। बटेश्वर में हुई संगीत सभा का आगाज इंदौर के विवेक नवले के एकल तबला वादन से हुआ। विवेकजी ने तीन ताल में अपना वादन पेश किया। पेशकार से शुरू करके उन्होंने पंजाब के कायदे, बंदिशें कुछ परनें और रेला बजाया। उनके साथ हारमोनियम पर दीपक खसरावल ने लहरा दिया। दूसरी प्रस्तुति ग्वालियर घराने की वरिष्ठ गायिका श्रीमती साधना गोरे की थी। साधना जी हाल ही में आकाश वाणी से रिटायर हुई हैं। वे देश के अनेक संगीत समारोहों में अपनी सफल प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। यहां उन्होंने राग गुनकली से अपने गायन की शुरुआत की। एकताल में विलंबित बंदिश के बोल थे -÷ आज राधे तोरे÷ जबकि तीनताल में मध्यलय की बंदिश के बोल थे ÷ अब न जगाओ प्यारे%% । दोनों ही बंदिशों को आपने ब? रंजक ढंग से गाया। विलम्बित बंदिश को आपने राग का विस्तार किया तो एक एक सुर खिल उठा। इसके बाद विविधता पूर्ण तानों की प्रस्तुति भी लाजवाब रही। आपने मिश्र किरवानी में दादरा की प्रस्तुति दी बंदिश के बोल थे ÷सुन्दर सा?ी मोरी÷। श्रृंगार रस में डूबे इस दादरे को आपने ब? ही रंजक अंदाज में पेश किया। गायन का समापन आपने मीराबाई के भजन ÷भज ले रे मन गोपाल÷ से किया। आपके साथ हारमोनियम पर महेशदत्त पांडेय ने सांगत की जबकि तबले पर साथ दिया मनोज पाटीदार ने। सभा का समापन दिल्ली से आये प्रभात कुमार के सरोद वादन से हुआ। प्रख्यात सरोद वादिका विदुषी शरण रानी के पटु शिष्य प्रभात कुमार ने अपना वादन राग बसंत मु?ारी में पेश किया।

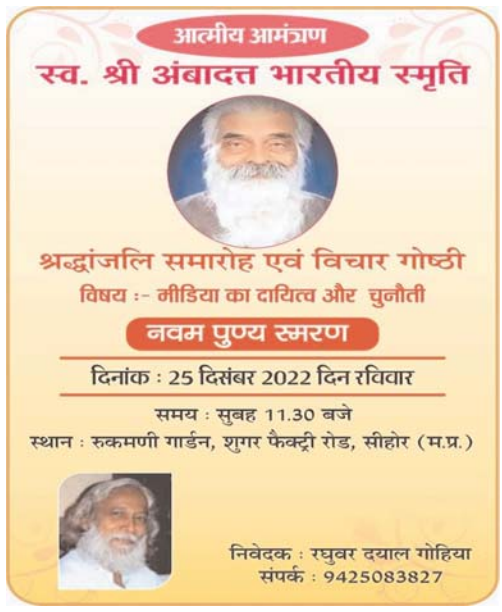

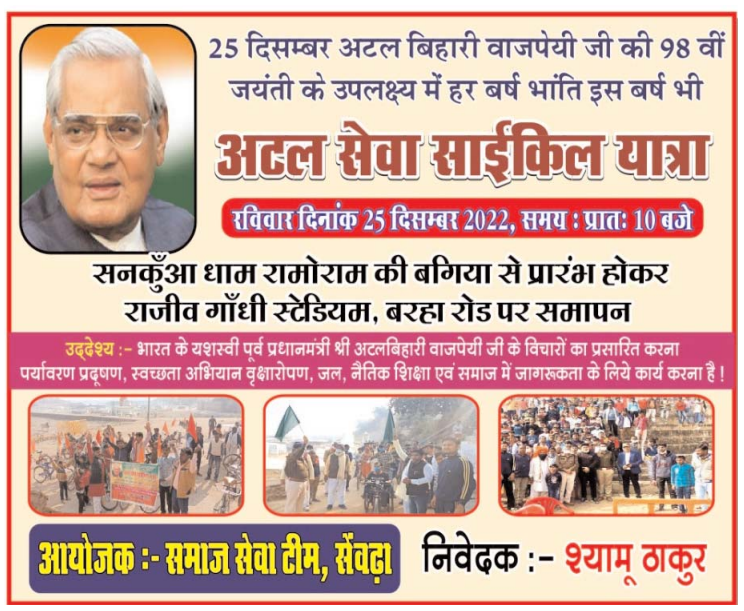

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478